पैग़म्बरे इस्लाम और उनका संदेश

लेखक
मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
मोहतमिम-मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूल यतामा, रायपुर (छ.ग.)
एक्स लेक्चरार आर.एस. यूनिवर्सिटी रायपुर (छ.ग.)

शायकर्दा
मोहसिने मिल्लत एकेडमी
मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूल यतामा,
बैजनाथपारा, रायपुर (छ.ग.)
फोन 0771-535283

पैगम्बरे इस्लाम

और

उनका संदेश

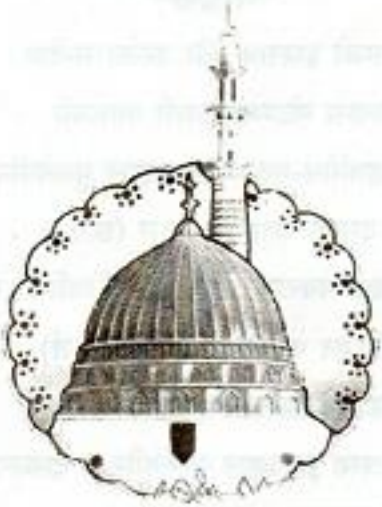

लेखक

मौलाना मोहम्मद अली फारूकी

मोहतमिम-मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूल यतामा, रायपुर (छ.ग.)

एक्स लेक्चरार आर.एस. यूनिवर्सिटी रायपुर (छ.ग.)

शायकर्ता

मोहसिने मिल्लत एकेडमी

मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूल यतामा,

बैजनाथपारा, रायपुर (छ.ग.)

फोन 0771-535283

नाम :- पैगम्बरे इस्लाम और उनका सन्देश

लेखक :- मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
मोहतमिम-मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन
व दारूल यतामा, रायपुर (छ.ग.)
एक्स लेक्चरार आर.एस. यूनिवर्सिटी रायपुर (छ.ग.)

प्रूफ रीडिंग :- मोहम्मद फहीम (ऑफिस इंचार्ज)

शायकर्दा :- मोहसिने मिल्लत एकेडमी
मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूल यतामा,
बैजनाथपारा, रायपुर (छ.ग.)
फोन 0771-535283

संस्करण	प्रति	वर्ष
प्रथम संस्करण (पहली इशाअ़त)	2000	2002
दूसरा संस्करण (दूसरी इशाअ़त)	5000	2010
तीसरा संस्करण (तीसरी इशाअ़त)	5000	2015

Rs. 30/-

फेहरिस्त

कौन	कहाँ
दो बातें	4
पैगम्बरे इस्लाम और साइंसी इंकेलाब	5
खुदा के आखरी पैगम्बर	15
पैगम्बरे इस्लाम और उनका अख्लाक	33

दो बातें

HISTORICALLY ISLAM HAS BEEN VERY TOLERANT OF OTHER RELIGION.THE MUSLIM WORLD WAS A BEACAN OF CIVILISATION AND TOLERANCE WHEN EUROPE WAS IN THE DARK AGES . (TONY BLIYAR P.M.GREAT BRITAIN)

इतिहास बताता है कि अन्य धर्मों के प्रति इस्लाम सहिष्णु रहा है जबकि योरोप अंधकार में था इस्लामी दुनिया सभ्यता और सहिष्णुता का ज्योति स्तंभ थी

टोनी ब्लेयर की यह राय हकीकत में पैगम्बरे इस्लाम की महानता पर श्रद्धा के फूल हैं जो शब्दों के माध्यम से हमारे लिए लम्हए फिकरिया हैं। यह क्रांतीकारी समाज, यह शिक्षा के प्रकाश से प्रकाशित हृदय यह दया और प्रेम के सागर में नहाती सोसायटी वास्तव में पैगम्बरे इस्लाम की देन है जिन्होंने अपनी मधुर वाणी और अमृत बोलों से एक ऐसे समाज का निर्माण किया जो अपने समय का सबसे ज्यादा शिक्षित समाज होने के साथ सभ्यता का ऐसा प्रतीक भी था जिनके मधुर प्रकाश से सारा संसार जगमगा रहा था। जिसको इस्लाम प्रेमियों ही ने नहीं बल्कि उसके दुश्मनों ने भी स्वीकारा है।

आज के संसार में पैगम्बरे इस्लाम की जीवनी और उनके संदेश से परिचित होना विश्व के हर व्यक्ति के लिए उतना ही आवश्यक एवं लाभदायक है जितना कि एक मनुष्य को जीवन यापन के लिए भोजन की जरूरत है। यह एक ज्वलंत वास्तविकता है कि बगैर गिजा के इन्सानी जिन्दगी नामुमकिन है उसी प्रकार पैगम्बरे इस्लाम को जाने समझे और माने बगैर दूसरी दुनिया में हमारे लिए कामयाबी नामुमकिन और असंभव है। संसार के आप पहले व्यक्ति है जिन्होंने एकता का न केवल संदेश दिया बल्कि उस पर आधारित एक पवित्र समाज का निर्माण करके भी दिखा दिया। आपने संसार को एक खुदा की वंदना और इबादत का अत्यंत गर्वशाली पैगाम देकर हर व्यक्ति को उस का यह क्रांतिकारी मार्ग दिखाया कि चांद और सूरज से लेकर धरती तक और आकाश से लेकर पाताल तक सब मनुष्य के लिए है, उनकी रचना ही इसलिए की गई कि वो मनुष्य की दासता करें और मनुष्य उन पर राज्य करे। पूरा संसार मनुष्य के लिए है और मनुष्य अपने ईश्वर के लिए। उसका माथा केवल ईश्वर के सामने झुकने के लिए उसकी वंदना अपने ईश्वर के लिए, उसका जीवन अपने ईश्वर के लिए, सारा संसार उस पर अर्पित होगा और वह सिर्फ अपने खुदा के सामने झुकेगा। अब यह संसार वालों का काम है कि वो अपने को जाने। संसार को समझे और खुदा को पहचाने।

फकाद – मोहम्मद अली फारूकी

पैग़म्बरे इस्लाम और साइन्सी इन्क़लाब

आसमान के नीचे धरती के ऊपर जिन अजीम और महान शख़्सियतों ने सबसे ज्यादा इन्केलाब अंगेज इतिहास को जन्म दिया। उनमें खुदा के आखरी पैगम्बर हजरत मोहम्मद, सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम का नामेनामी इस्मेग्रामी सबसे ज्यादा रौशन चमकदार और क्रांतिकारी है। जिन्होंने मुर्दा कौम में एक नई रूह फूंक कर न सिर्फ इन्सानी जहन - वो फिक्र में ठोस तब्दीली पैदा की, बल्कि तारीखे इन्सानी का धारा मोड़कर एक नए इतिहास को जन्म दिया। जिसमें दीनी तबलीग़ की आकाश गंगा भी है और पवित्र राज्य का निर्माण भी। एक नई उम्मत की तशकील भी, आर्थिक और सामाजिक रौनक लिए हुए, पाकीजा भाईचारे की चहल पहल भी है, और इल्मी वो फिकरी रौशनी लिए हुए जहन वो फिक्र की शक्ति भी। सोच समझ वो जानकारी का उजाला भी है और तहकीक वो तलाश का सवेरा भी। गर्ज की आपने ऐसे फिकरी वो इल्मी इन्केलाब की ढाग बेल डाली जो हमेशा कारवाने हक की राहों में उजाला बिखेरता रहेगा, और हर दौर, हर युग, हर समाज और हर इलाके को अपने मधुर प्रकाश से जगमगाता भी रहेगा।

अमरीका के मशहूर वैज्ञानिक माईकल हार्ट () उम्दा इतिहासकार भी है, उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "एक सौ" में आपको पूरी इन्सानी इतिहास का सबसे बडा आदमी बताते हुए और श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए लिखते हैं।

"He was the only man in histotry who was superemly successfull on bath the religious and secular levels."

"आप इतिहास के वो अकेले आदमी हैं जो धार्मिक और दुनियावी सतह (सांसारिक स्तर) पर इन्तेहाई हद तक कामयाब रहे।"

एक अंग्रेज़ टामस कारलाएल ने तो आपको तमाम नबीयों का हीरो करार दिया है। जार्ज बरनाड शाह आपकी इन्केलाब अंगेज तारीख (क्रांतिकारी जीवनी) पढकर पुकार उठा कि अगर आप आज के दौर में होते तो दुनिया के वो सारे मसाएल (समस्याएँ) बहुत आसानी के साथ

हल कर लेते, जिनसे आज इन्सानी तहजीब खतरा महसूस कर रही है।

अमरीकी इन्साईक्लोपीडिया का एक अंग्रेज लेखक आपकी तारीख (इतिहास) पढकर हैरत में पड़ गया और पुकार उठा।

Its Advant change the Course of human history.

'आपने इन्सानी इतिहास का धारा मोड़ दिया'' फ्रांस का महान जनरल नैपोलियन बोनापार्ट और हिन्दुस्तान के आजादी के काएद गांधीजी इस्लाम की इन्केलाबी तारीख पढ़कर एक ऐसे समाज की तमन्ना कर उठे जिसने इस्लामी विचारधारा, इस्लामी सभ्यता की छत्रछाया में चौदह सौ वर्ष पहले अरब की धरती पर जन्म लेकर काले गोरे, दोस्त दुश्मन अपने पराए सभी को एक कर दिया था, जिसमें न कोई छोटा था न कोई बडा, बल्कि सब आपस में भाई-भाई बनकर एक खुदा के मानने वाले नजर आ रहे थे। जिसने दिल वो दिमाग की तारीकियों में इल्म वो इर्फान का उजाला बिखेरा और दिल वो जिगर के अंधेरों में ज्ञान और समझ का चिराग जलाकर उन्हें इन्सानी समाज का वो चांद और सूरज बनाया जिसकी स्वच्छ और पवित्र किरणों से धरती का कण-कण (जर्रा-जर्रा) जगमगा उठा। एक सुन्दर, सुहानी सुबह का उजाला हर तरफ मुस्कुराने लगा।

संसार का इतिहास उस इन्केलाब की मिसाल पेश करने से बे बस और मजबूर है। जिस तरह धरती के ऊपर हर जगह ये नीला आकाश फैला हुआ दिखाई देता है, उसी प्रकार जीवन के जिस हिस्से पर नजर डाली जाए। प्यारे रसूले पाक सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की तालीमात (शिक्षा) की किरण जगमगाती नज़र आएंगी। इल्म वो फिक्र की महफिल हो या सामाजिक, राजनैतिक या आर्थिक दुनिया, तहकीक (खोज) वो तलाश और प्रयोग (रिसर्च) का कारवां हो, या इबादत वो रियाजत (पूजा और ध्यान) के मुसाफिर। राज्य सिंहासन पर बैठने वाले राजा और मैदाने जंग के सिपाहसालार हों या अद्ल वो इंसाफ (न्याय) की दुनिया के सरताज। अख्लाक और तहजीब के चांद वो सूरज हो या खानदानी शीराजी बन्दी (Consoliolation of Family) और समाजी इसलाह के अलमबरदार (समाज सुधारक) गर्ज कि

जिन्दगी का कोई गोशा हो या बन्दगी का शोअबा, समाज का कोई हिस्सा हो या शिक्षा, विज्ञान और टेक्नालाजी का कोई मंसूबा, हर जगह आपकी हयाते मुकद्दसा की तनवीर (प्रकाश) जगमगाती नजर आएगी और फैज बरसाती दिखाई देगी।

आज सारी दुनिया में चांद और सूरज को पूजने के बजाए उन पर रिसर्च (परिक्षण) करने वालों की दौड नजर आ रही है। बन्दों की बन्दगी (मनुष्यों की पूजा) की जगह खुदा परस्ती के जौहर नजर आ रहे हैं। सियासी दुनिया में नस्ल परस्ती (जाति भेदभाव) नस्ली शहेंशाहियत की जगह आवामी हुकूमत लोकराज (Democracy) का प्रकाश जगमगा रहा है। दिन और रात के फेरे से डरने के बजाए आज दुनिया वहां तहकीक और रिसर्च के गुलशन महका रही है। गिरते हुए झरनों, उमडती हुई मौजों, गरजते हुए बादलों के सामने माथा टेकने और उन्हें खुदाई मंसब (ईश्वरीय स्टेज) पर बिठाने के बजाए उन पर हर रोज नई-नई तहकीकात (परिक्षण) के दरवाजे खोले जा रहे हैं।

हवाओं को देवता समझने के बजाए उसका सीना चीर कर, सूरज के जलाल (गुस्से) से घबरा कर उसके सामने दंडवत करने के बजाए उस पर फंदे डालने का प्रोग्राम बनाकर आज एक नई दुनिया की तलाश (खोज) की जा रही है। ये सब आप सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम की तालीमात ही के असरात है। जिसने उन्हें पूजने के बजाए और उनके सामने झुकने के बजाए उन्हें अपने बस में (Control) करने की शिक्षा दी और उनसे काम लेने का ढंग दिया।

धरती की कोख कभी बांझ नहीं रही है। इसके सीने पर हमेशा ही मुफक्केरीन और मुदब्बेरी (महान विचारकों, विद्वानों और प्रगतिशील विचारकों) का जन्म होता रहा है। जिन्होंने फिक्र वो नजर की एक दुनिया बसाई और ताकत वो कुव्वत का नया इतिहास रचा। जिनकी जादुगरी ने सदियों से मुर्दा रहने वाली कौम (समाज) को नई धन गरज के साथ मेहनत व अमल (परिश्रम) के चौराहो पर ला खडा किया, मगर उनके इतिहास पढने से ये बात सूरज की धूप की तरह साफ नजर आने लगती है, कि उन्होंने कुछ हिस्सों पर ही अपना सारा जीवन

व्यतीत कर दिया। उसके आगे न वो सोच सके और न ही समाज को कुछ दे सके। यही कारण है कि आज न उनकी तालीमात (शिक्षाओं) का कोई ठोस रिकार्ड है न खुद उनके व्यवहारिक जीवन का कोई ठोस प्रमाण! समय के धारे ने उन्हें तिनके की तरह बहाकर भूल भूलय्या के समुद्र में डुबो दिया है। इसलिए आज न उनका नाम है और न उनका काम।

हजरत इब्राहीम, हज़रत मूसा, हजरत ईसा अलैहिस्सलाम जैसे मुकद्दस और महान अंबिया-बुद्ध, कैफुंशस जैसे मज़हबी (धार्मिक) पेशवा। हुमर चासर, ग़ालिब और रविन्द्रनाथ टैगोर जैसे शायर, हरिश, सिकंदर, शद्दाद और नमरूद जैसे फातेहीन और बादशाह , हलाकू चंगेज, फिरऔन, हिटलर जैसे ज़ालिम, फीसा, गोरस, इब्ने सीना, अरस्तू जैसे फलसफी सोलिन अम्बेडकर जैसे कानून बनाने वाले, अजंता अलोरा जैसे हैरतअंगेज गारों को काट कर मूर्ती बनाने वाले, आर्टिस्ट। उनकी जिन्दगी के हालात कितने मुंतशिर, कितने बिखरे हुए और कितने उलझे हुए, नामुकम्मल हैं जिन्हें आज तक न क़्यास जोड सका न ख़्याल की ऊंची उडान उनका पता लगा सकी। गुमनामी और बेख़बरी के धुंधलके हैं जो उन बडी-बडी शख़्सियतों की ज़िन्दगी पर छाए हुए हैं।

मगर इस पहलू से जब हम प्यारे रसूले पाक की हयाते मुकद्दसा पर नज़र डालते हैं तो दिल में ख़ुशी और मसर्रत के फूल खिलने लगते हैं। क़ल्ब वो नज़र में आकाश गंगा की मधुर प्रकाश की मुस्कुराहट बिखरने लगती है। आपकी पैदाइश से लेकर ज़िन्दगी की आख़री सांस तक की पूरी जिन्दगी का जो रिकार्ड हमारे सामने है वो इतना हसीन, ख़ूबसूरत, मनमोहक और ज़ीवन प्रदान करने वाला है कि - बेसाख़्ता इन्सान उनके चरणों पर अपना सब कुछ अर्पित करके गर्व महसूस करने लगता है। आपके पवित्र और उज्जवल जीवन के जिस हिस्से पर नज़र डालिए वो इतना साफ, इतना सुथरा और इतना स्पष्ट दिखाई देता है कि उसका अध्ययन करने वाला खुद को सदियों पहले के उस पवित्र माहौल में महसूस करने लगता है।

जहां कदम-कदम पर आपकी तजल्लियात और मधुर प्रकाश का उजाला है। मिनट-मिनट पर आसमानी फरिश्तों का आने-जाने वाला नूरानी काफिला है। मदीने की हसीन वादियां हैं और चाहने वालों के झुरमुट में एक मनमोहनी सूरत के नक्श वो निगार साफ दिखाई देने लगते हैं। अभी रहमतों नूर की वर्षा हो रही थी। अब बख्शिस व मगफेरत का परवाना मिल रहा है। अभी मस्जिदे नबवी के आंगन में उनके पवित्र मुखड़े के दर्शन से आंखें चकाचौंध हो रही थीं, और अब अपने श्रद्धा के सामने वो सजदों के मोती निछावर कर रहे हैं। थोडी देर पहले खानाए काबा की दीवारों के पास ज़ौके बन्दगी का जल्वा दिखा रहे थे और अब शोअबे अबी तालिब में बुलन्द हिम्मती का मुज़ाहेरा भी फरमा रहे हैं और मेना की वादी में सदासुखी और खुशी का गुर बता रहे हैं। कभी वादियों, पहाडों से गुज़रते हुए ज़िन्दगी का सलीका सिखा रहे हैं, तो कभी मैदाने जंग में आखरी हिचकी लेने वाले आशिकों को न मिटने वाली ज़िंदगी की खुशखबरी सुना रहे हैं।

नर्ज आपकी हयाते मुकद्दसा का हर पहलू दिलकश, खूबसूरत और आकर्षित होने के साथ इतना साफ सुथरा, स्पष्ट और सूर्य के समान रौशन और चमकदार है कि दुश्मनों को भी इस हकीकत के सामने सर झुकाना पड़ा कि हजारों लाखों में नहीं बल्कि करोड़ों के बीच आपको पहचानना इतना सरल और आसान है जैसे धरती पर रहकर सूरज को देखना। आज इतना सही, सच्चा, मुकम्मल मुसतनद और ठोस इतिहास किस कौम के पास है जो उन्हें सदियों पहले अपने रहनुमा, अपने पेशवा और अपने लीडर की उस दुनिया में पहुंचा दें जहां वो उन्हें चलता फिरता सोता जागता देख सकें। इस दृष्टिकोण से आपका जीवन "सबसे साफ" दिखाई पडता है। जहां कदम रखते ही रहमत वो नूर का समुन्द्र उमडता नज़र आता है, जिसकी उठती हुई मौजें हमें अपनी गोद में लेकर सुख वो शांति के लिए नए संसार में पहुंचा देती है।

धरती के सीने पर हज़ारों विद्वान और विचारकों ने जन्म लिया, जिनकी फिक्रो नज़र (क्रांतिकारी विचारों) ने मुल्कों का जुगराफिया बदल दिया। क़ौमों के सोचने समझने के तरीके जिससे बदल गये,

मगर समय ने सदा उनके विचार धाराओं को गलत साबित किया। दूर न जाइये माज़ी करीब (बीते हुए कल) में लेनिन और स्टालिन का नजरिया सामने रखिये। जिसने आधी दुनिया को अपनी लपेटे में ले लिया था, मगर अभी उनके कागज़ की स्याही भी नहीं सूखने पाई थी कि आज वो सिद्धांत वो बुनियादें, वो नजरियात अपनी ही जन्म भूमि पर दफ्न हो रहे हैं।

मगर आपका बर्पा किया हुआ इन्कलाब आंधी और तूफान बनकर उठा और सारी दुनिया पर अपनी छाप इस शान-वो-शौकत और जाह-वो-जलाल के साथ छोड गया कि - उसके सामने किसी भी नज़रिये और उसूल का टिकना मोहाल हो गया, हर नजरिया धरती के रूपरेखा और रंग-वो-नस्ल के एख्तिलाफ के साथ बदलता रहता है और समय के धारे के साथ खुद में परिवर्तन लाता रहता है। मगर आपने जिस बुनियाद पर अपने उसूलों को कायम फरमाया वो इतने ठोस और मजबूत हैं कि सदियां गुजरती रहीं, सूरज निकलता रहा, चांद डूबता रहा आंधियां उठती रहीं, तूफान आते रहे, नस्लें बनती - बिगडती रहीं, आबादियां घटती बढती रहीं, मुल्की भूगोल और सामाजिक सोचो फिक्र का पैमाना घटता बढ़ता रहा, मगर आपके काएम करदा (बनाए हुए) उसूल आज भी अपनी थकताई, अपनी अजमत और अपनी महानता का लोहा मनवा रहे हैं। कोई देश या राज्य हो या कौम वो मिल्लत, कहीं का भी समाज व मोआशिरा हो या किसी भी जगह की आबोहवा हर मुल्क, वो मिल्लत में, हर समाज वो मोआशिरा में, हर इलाके और क्षेत्र में हर फिक्र वो फन की महफिलों में; हर तहकीक वो तफतीश और रिसर्च की यूनिवर्सिटियों में, हर सियासी और मआशी (राजनीतिक आर्थिक) मैदानों में, हर गुलशन, हर चमन और हर सेहरा में आपके कवानीन (Law) आपके नजरियात आपके सिद्धांत और आपके प्रिंसपल इस आन बान, शान के साथ कायम हैं कि उसे बदलने वाले खुद बदल गए मगर उसे न बदल पाए।

तारीखे इन्सानी में लीडरों का इतिहास बडा विचित्र है। यह खुद उसूल बनाते हैं और सारी दुनिया को उस पर अमल करने और चलने

की दावत देते हैं। मगर जब खुद अमल करने का समय आता है तो उसे कदमों (पैरों) से ठुकराते हुए गुजर जाते हैं। उस वक्त अपने उसूल की मौत से न उनका चेहरा बिगडता है न अपने विचारों के क़त्ल (हत्या, खून) से उनकी पेशानी पर बल पडता है। इसी वजह से उनकी जिन्दगी भी नहीं होती, वो नजरिया क्या जिन्दगी पा सकता है जो अपने जन्मदाता को भी आकर्षित न कर सके। डिकार्ड ने कहा था-

The perfect preacher among the rarest kind in the world.

योग्य उपदेशक संसार की सबसे बहुमूल्य प्राणी है। हिटर ने अपनी जीवनी (Mein Kampt) में लिखा था- A great theorist is seldom a great leader.

"एक महान विचारक कदाचित ही महान नेता होता है।"

मगर खुदा के आखरी पैगम्बर हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम की जात फिक्र वो अमल (सोच और कार्य) की हसीन संगम थी। आपने जो नजरियात (दृष्टिकोण) पेश किये उस पर सबसे पहले खुद चल करके दिखाया, जिस फिक्र और नजरिये की तरफ आप लोगों को बुला रहे थे आप का घर उसका अमली नमूना (Practical Example) था। प्रोफेसर बार थू स्मिथ के मुताबिक आप राज्य और धार्मिक संस्थान दोनों के संरक्षक थे। वोह एक पोप (मजहबी रहनुमा) और कैसर (सम्राट) दोनों थे. मगर वोह ऐसे पोप थे जो पोप के दावों से खाली थे। वोह ऐसे कैसर (महान सम्राट थे) जो फौजों के बगैर थे। न उनके पास हर वक्त तैयार खडी रहने वाली फौज थी न आत्म सुरक्षाबल (Safety Guard) न ही महल, न ही कोई मुकर्ररा टेक्स की आमदनी। अगर किसी को कभी यह दावा करने का हक हो कि उसने खुदाई हक के ज़रिए हुकूमत की है तो वोह हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ही होंगे। क्योंकि उनके पास तमाम अख्तियारात (Full Power) पूर्ण साधन थे। लेकिन उन तमाम साधनों के बगैर। जिनसे वोह अख्तियारात हासिल किये जाते हैं और बाकी रखे जाते हैं। उन्होंने शक्ति दिखाने और रख-रखाव का कभी ख्याल नहीं किया। उनकी स्वयं के जीवन की सादगी वैसे ही थी जैसे उनकी बाहरी जिंदगी।

आपने न सिर्फ अपने दृष्टिकोण को ठोस उसूलों पर कायम फरमाया बल्कि उसकी बुनियाद पर एक ऐसे समाज का निर्माण किया जो आपके सिद्धांतों का चलता फिरता नमूना था। उस समाज का हर आदमी आज इन्सानी समाज को चांद की तरह चमकाने वाला, फूलों की तरह महकाने वाला है। राजनीति और आर्थिक हीरे उन्होंने निखारे, सभ्यता वो तमद्दुन की जुल्फों को संवार कर इन्सानियत का चेहरा इतना रौशन और उज्जवल बना दिया कि उसके सामने कहकशा (तारों का झुरमुट) का जमाल भी शरमाने लगा। फिर इस तरह के आदमी दो चार नहीं, हजार दो हजार नहीं बल्कि लाखों की संख्या में बनकर निखरे और संवरकर उभरे कि "हिस्ट्री आफ अरब" का लेखक प्रोफेसर फिल्प हिट्टी को यह लिखना पड़ा।

Afer the death of the prophet slerik Arabic seems to have been Converted as if magic into a nursary of herose the like of whom both in number and quality is hard to find any where.

P.K. Hette History of Arabs (1979 Page No. 42)

पैगम्बरे इस्लाम की वफात के बाद ऐसा मालूम होता था जैसे अरब की बंजर ज़मीन जादू के जरिये हीरों की नर्सरी में बदल गई। ऐसे हीरे जिनकी मिसाल तादाद (संख्या) या नौइय्यत में (Quality) में कहीं और पाना सख्त मुश्किल है।

वास्तविकता तो यह है कि यह आपके सिद्धांतों की महानता है जिसने जीवन के हर भाग में न सिर्फ ऐसे चरित्रवान व्यक्ति छोडे बल्कि एक लाजवाब समाज की स्थापना करके दुनिया में अमिट चित्र छोड़ा। इसके विपरित दुनिया का कोई संविधान हो या कोई सिद्धांत। चाहे धार्मिक हो या सैकुलर, समाजी हो या आर्थिक, राजनीति हो या सुधारक, नया हो या पुराना। ऐसा है ही नहीं जिसने अपने मानने वालों को सर से पांव तक पूर्ण रूप से अपनी छत्रछाया में लेकर उनका इस तरह उद्धार किया हो।

इस गर्वशाली और महान सफलता के बावजूद। जबकी दस लाख वर्गमील पर आपका सिक्का चल रहा था, पूरे अरब देश के राज्य की रस्सी आपके हाथों थी तब भी आपकी सादगी में कोई फर्क नहीं आया। घर का काम हो या बाजार का हाल, दोस्तों की मिजाज पुर्सी हो या

मरीजों की देख रेख, आप खुद बढ़कर करते थे, पूरा मदीना सोने, चांदी की नहर में नहा रहा था लेकिन दौलत की कसरतें, रुपये सिक्कों की बारिश के मौके पर भी अरब के ताजदार का यह आलम था कि कोई दिन चूल्हा नहीं जलता था, कई-कई रात पूरा घर भूखा सोता, बदन पर मोटे कपडे होते। जिस पर आपने हाथों से पैबंद लगाते, खजूर के पत्ते की बनी हुई चटाई पर रात गुज़ारते। यहां तक कि आखरी रात जिसके बाद आपने धरती को छोडा और दुनियां से परदा फरमाया उस रात भी आपके यहां अंधेरा था। क्योंकि वहां चिराग में डालने के लिए तेल नहीं था। हालात बदल गये, रहन-सहन का तरीका बदल गया, समाज की गरीबी खत्म हो गई, सरकारी खजाना सोने चांदी से भर गया। सब बदल गया। मगर नहीं बदले तो खुदा के आखरी रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) नहीं बदले। खुशी की बारात हो या गमों का तूफान, परेशानियों का अंधेरा हो या खुशियों का उजाला। अच्छा हो या बुरा, आप हर हाल में एक थे और आखिर तक वैसे ही रहे।

तारीख (इतिहास) गवाह है कि फतह और कामयाबियों ने बड़े-बड़े उपदेशकों और चरित्रवानों के रहन-सहन को बदल दिया, मगर खुदा के मुकद्दस रसूल खुद को बदलने नहीं आये थे। वो तो दुनिया को बदलने आये थे। आखिर दुनिया को बदलना पडा और उनके रास्ते पर चलकर ही कामियाबी हासिल करनी पडी। और आज भी दुखों का इलाज उनकी तालीमात और आदर्शों को अपनाने में है और आपके बताए हुए रास्ते पर चलने में है।

आज इक्कीसवीं सदी की तरफ बढती दुनियां सब कुछ हासिल करने के बावजूद अमन वो सुकून, शांति और सद्भावना से महरूम हो चुकी है। यह सदी जिसमें इल्म-वो फिक्र की नई-नई खोज ने सारी दुनिया को एक कुनबा और कबीला में बदल दिया, जिन्दगी को मुख्तसर और तेज़ रफ्तार बना दिया। बडी-बडी यूनिवर्सिटीयों का जाल बिछा दिया। मगर इसी सदी में दुनिया का भयानक विश्वयुद्ध लडा गया। हिरोशिमा और नागासाकी पर खतरनाक बमों के जरिए पूरी-पूरी नस्लों को सालों के लिए अपाहिज और बेकार बना दिया, कुवैत का बहाना बनाकर, इराक की नाकाबंदी करके फिरऔनी घमण्ड का नंगा नाच नाचा गया। मनुष्यता का खुले आम

कत्लेआम हुआ। सभ्यता और भाईचारे का जनाजा पैरों तले रौंदा गया। नमरूदी घमंड और ताकत ने निहत्थों और मजबूरों पर जुल्मों सितम कर, अपनी कामयाबी का जश्न मनाया। जिसके नतीजे में आज सारी दुनिया इतनी तरक्की और शिक्षा के बावजूद मासूम बच्चों का कत्लेआम, औरतों का लुटता हुआ सुहाग, माँ की खाली होती हुई गोद देख रही है। दुनिया अपना सुख वो चैन खोती रही और फिर उसकी तलाश में हैरान वो परेशान दर-दर ठोकरें खाती रही। आज स्थिति यह है कि धरती वाले सुकून की दौलत चाहते हैं मगर वह उन्हें नहीं मिल पा रही है। आज इन्सानियत का चमन अपने माली की राह देख रहा है। आज की थकी-हारी दुनियां को चैन वो सुकून बरसाने वाले रहबर चाहिए, औज कौम वो मिल्लत ढिलो ढिमाग का सुकून चाहती है और यह सब हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम के पवित्र संदेश और उनके महान गौरवशाली जीवन में मिलेगा।

आज धरती के सीने पर अनगिनत एजम, कीडे-मकोड़े की तरह बिखरे पडे हैं। कैप्टालिजम, ड्रावनिजम, सोशालिजम। मगर इन एजमों ने ढिल की दुनियां का यकीन खो दिया, मानवता का गला घोट दिया, ईमान की ना खत्म होने वाली दौलत बर्बाद कर दी। इन्सानी भरोसे और यकीन का शीशा चकनाचूर कर दिया, खुदा और रसूल की मुहब्बत मिटा डाली और फिर ये सब कुछ करने के बाद इन्हीं भरोसे और यकीन, सब्र और सुकून मोहब्बत वो भाईचारगी, अजम वो इरादा प्यार मोहब्बत भाईचारगी को ये अकवामे मुत्तहेदा (अन्तरराष्ट्रीय संगठन) के प्लेटफार्म में तलाश कर रहे हैं। यह उन्हें राजनीति पार्टियों में ढूंढ रहे हैं। यह उन्हें पुस्तकालयों में खोज रहे हैं। यह उसके लिए लाइब्रेरियों में भटक रहे हैं। यह उसके लिए एजमों के भूल भुलय्या में दौड रहे हैं, मगर हजार कोशिश, हजार जद्दोजहद, हजार मेहनत वो परेशानी हजार ढिमाग पच्ची करने के बावजूद आज तक उसे येह न ढूंढ सके। अब दुनिया को समझ लेना चाहिए कि कल दुनिया ने उसे मोहम्मदे अरबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दामने करम से वाबस्ता (जुड) कर पाया था आज उन्हीं पैगामात, उन्हीं के उसुलियात, उन्हीं की तालीमात से इन्सानियत का चेहरा निखरेगा। धरती का सीना जगमगाएगा। आदमियत का वेकार बुलन्द होगा।

खुदा के आखरी पैगम्बर

हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम

खुदा के आखरी पैगम्बर (हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम) का जन्म 20 अप्रैल सन् 570 ईस्वी को मक्का-ए मुअज्जमा में हुआ। आपके पिता का नाम हजरत अब्दुल्ला था और मां का नाम हजरत आमना। आप के जन्म से कुछ माह पूर्व ही आपके पिता स्वर्गवास हो गए और छः साल बाद आपकी वालिदा भी स्वर्गवासी हो गयीं। आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब ने आपका पालन पोषण किया। जब आपकी आयु 8 वर्ष की हुई उस समय आपके दादा भी चल बसे, अब आप के चाचा अबू तालिब ने आपका पालन पोषण किया।

जब आप बड़े हुए तो अपने चाचा के साथ व्यापार (कारोबार) में लग गये। आप बाल अवस्था से ही मृदुभाषी, हंसमुख, स्वभाव तथा चरित्रवान व्यक्तित्व वाले थे। ईमानदारी और सच्चाई में तो आपका नाम दूर दूर तक फैल चुका था। उस समय सारी दुनिया जहालत और अज्ञान रूपी तारीकी के अंधेरे में भटक रही थी। रोम और ईरान जैसी बड़ी शक्तियां एक दूसरे को समाप्त करने में लगी हुई थीं, हर तरफ युद्ध और अहिंसा का तूफान उमड़ रहा था। स्त्रियों का कोई मूल्य न था। लड़कियों को पैदा (जन्म) होते ही जीवित जमीन में गाड़ दिया जाता था। खुदा के पवित्र घर ''खानए काबा'' जिस की पवित्र आधारशिला, खुदा की इबादत के लिए हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने रखी थी और जहां से सारी दुनिया को एक खुदा के मानने का संदेश दिया था। उस ''पवित्र काबा'' में तीन सौ साठ बुत रखे हुए थे। हर कबिला एक दूसरे का शत्रु बना बैठा था। हर मनुष्य गंदगी में डूबा हुआ था। हर परिवार एक दूसरे को समाप्त करने पर उतारू था। उनकी अशिक्षिता की यह हालत थी कि एक बार किसी कबीले का ऊंट भटक कर दूसरे के क्षेत्र में चला गया मात्र इतनी सी बात पर ऐसी आग भड़की कि चालीस साल तक दोनों कबीले वाले एक दूसरे के खून के प्यासे बने रहे। दोनों तरफ के लगभग

सत्तर हजार आदमी इस युद्ध में काम आए।

ऐसे भयंकर, खतरनाक, गंदे वातावरण में भी आपका चरित्र किसी भी प्रकार की गंदगी से अपवित्र नहीं हुआ। आपकी सच्चाई, ईमानदारी का चर्चा देश विदेश में होने लगा तो मक्का की एक पूंजीपति विधवा हजरत खदीजा ने भी आपको अपना सामान व्यापार के लिए दिया। आपने बड़ी ईमानदारी और सच्चाई के साथ उनके माल को बेचा। हजरत खदीजा ने तो पहले ही आपकी सच्चाई और ईमानदारी का चर्चा सुन रखा था अब उन्हें स्वयं अनुभव भी हो गया तो उन्होंने आपके पास शादी का संदेश भेजा। हालांकि इससे पूर्व भी मक्का के बड़े-बड़े पूंजीपतियों ने उनके पास शादी का निमंत्रण भिजवाकर उनसे शादी करने की इच्छा प्रकट की थी। मगर उन्होंने सभी को जवाब दे दिया था। शादी के मौके पर आपके चाचा ने खुतबा (पवित्र मंत्र) पढ़ा और आपका निकाह पढ़ाया।

शादी के बाद आप रोजी रोटी की चिंता से मुक्त हो गये। समाज में दिन प्रतिदिन बढ़ती बुराईयां समाज के निम्न वर्गों पर होते हुए अत्याचार को देखकर आप बड़े दुखी होते। एक बार आपने कुछ लोगों को साथ लेकर एक संस्था की बुनियाद भी डाली। जिसका उद्देश्य दुखियों की रक्षा और अत्याचारियों को अत्याचारी से रोकना तथा हकदारों को उनका हक दिलाना था।

आपकी उम्र पैंतीस वर्ष की थी उस वक्त खानए काबा के बनाने के समय ''हजरे असवद'' (काबा में वह पवित्र काला पत्थर जिसके छूने से गुनाह धुल जाते हैं) उसे लेकर बहुत बड़ा आपसी मतभेद पैदा हो गया था। खान ए काबा पहाड़ियों के बीच में होने के कारण बरसात का सारा पानी उसके चारों तरफ भर जाता जिससे उसकी इमारत (भवन) को क्षति पहुंचने का डर होने लगा। मक्का के सारे लोगों ने इसे फिर से नये सिरे से बनाने का प्रोग्राम बनाया। जब तक निर्माण कार्य चलता रहा। सभी मिलजुल कर काम करते रहे। मगर जैसे ही ''हजरे असवद'' को उसकी जगह रखने का मामला आया, हर सरदार यह चाहने लगा कि वही उस पवित्र ''हजरे असवद'' को

उसकी जगह रखने का सौभाग्य उसी को प्राप्त हो। यहां तक कि कुछ लोगों ने खून में हाथ डूबोकर कस्में भी खा ली कि यह कार्य दूसरे को नहीं करने देंगे। लड़ाई झगड़े के इस वातावरण में अबु उमय्या बिन मुगीरा ने लोगों को यह सलाह दी कि कल सुबह सबसे पहले जो व्यक्ति खान ए काबा में आएगा। हम सब उसी का फैसला मानेंगे। खुदा शान दूसरे दिन सबसे पहले जो व्यक्ति ''काबा'' के सामने नजर आया वह हजरत मोहम्मद (सल्लल्लाहो तआला अलैह वसल्लम) ही थे। आपको देखकर सभी लोग खुशी में पुकार उठे। अमीन (सब से सच्चा ईमानदार) आ गया हम सब उसके निर्णय (फैसले) पर सहमत हैं। आपने सबसे पहले अपनी चादर बिछाई और उसमें ''हजरे असवद'' को रखा। फिर तमाम बड़े सरदारों से आपने फरमाया। तुम लोग इसका कोना पकड़कर उठाओ, जब वहां तक वो उठ गया जहां उसे रखा जाना था तो आपने उस जगह उसे रख दिया, इस प्रकार सभी लोग उस पवित्र काम में शामिल भी हो गये और एक भयानक युद्ध भी होते होते टल गया।

लड़ाई झगड़े और बुत परस्ती से आपको शुरू ही से घृणा थी, समाज की गुमराही पर आप दिल ही दिल में कुढ़ते, अक्सर आप मक्का से कोई तीन मील दूर स्थित पहाड़ ''जबले नूर'' (नूर का पहाड़) चले जाते और उसके एक गुफा (गार) जिसे ''गारेहिरा'' कहते हैं उसमें खुदा की याद में मग्न हो जाते। एक दिन आप उसी गार में खुदा की याद में मगन थे कि खुदा का फरिश्ता हजरत जिब्राईल (अलैहिस्सलाम) आये और आप को आवाज दी।

''इकरा बेइस्मे रब्बेकललजी खलक''

अपने रब के नाम से पढ़िये। यह खुदा की तरफ से आप पर पहली वही (पवित्र वाणी) थी।

काम की जिम्मेदारी और जलाले खुदावंदी से आप घबरा उठे, बदन पर लरजा और कपकपी तारी हो गयी, आप फौरन घर तशरीफ लाये और अपनी बीवी हजरत खदीजा को सारे हालात (घटनाएं) बताये। उन्होंने आपकी दिलजोई की, आपको ढारस बंधाया और तसल्ली देते हुए कहा कि अब

बडे मेहमाननवाज और रिश्तेदारों, यतीमों, गरीबों, बेवाओं की कदर करने वाले सच्चे और अमीन है। इसलिए आप फिक्र न करें, खुदा आपको अकेला नहीं छोडेगा। फिर वोह अपने चचाजाद भाई वरका बिन नोफिल के पास ले गईं। जो बहुत बूढे व्यक्ति थे मगर तौरैत व इन्जील के महान ज्ञानी और बड़े जानकार भी थे। उन्होंने पूरी बातें सुनने के बाद कहा ये ''वही नामूसे अकबर'' है जो इससे पहले हजरत मुसा और हजरत ईसा अलैहिस्सलाम के पास आया। इसके साथ ही उन्होंने इसकी भी तसदीक की (सत्यापन करना) कि खुदा ने आपको अपना नबी (दूत) बनाया है और फिर ये भविष्यवाणी और पेशिनगोई भी की कि जल्द ही आपको तबलीग (प्रचार) का हुक्म मिलेगा। और यह भी बताया कि उस वक्त सारी कौम (समाज) आपका दुश्मन भी हो जायेगी। यह कहते हुए बडे दर्द के साथ ठंडी आह भरकर कहा कि काश मैं उस वक्त जवान होता। कुछ दिनों बाद फिर वही फरिश्ता आपको नजर आया। आपको तबलीग (धर्म प्रचार) का हुक्म दिया गया। आपने हुक्म खुदावंदी की फरमा बरदारी में ईश्वरी आदेश को स्वीकारते हुए इस्लाम धर्म का प्रचार शुरू कर दिया। सबसे पहले बडों में आपके दोस्त हजरत अबूबकर ने, लड़कों में हजरत अली ने, गुलामों में हजरत जैद बिन हारिस और हजरत बिलाल ने औरतों में आपकी राजदार, जीवनसंगनी हजरत खदीजा ने इस्लाम कुबूल किया।

लगातार तीन वर्ष तक आप खामोशी के साथ तबलीगे इस्लाम फरमाते रहे, फिर खुदा के एक हुक्म के बाद आपने एक दिन (सफा नामी पहाड) पर चढ़कर लोगों को आवाज दी। लोग बेतहाशा आप की तरफ दौड़ पड़े। सबसे पहले आपने स्वयं अपने प्रति लोगों से प्रश्न किया कि बताओ मेरे बारे में तुम क्या कहते हो, सभी उपस्थित लोग एक साथ एक स्वर में पुकार उठे कि हमने कभी भी आपकी जुबान से कोई गलत और झूठी बात नहीं सुनी। आप सच्चे हैं। आप अमीन (अमानतदार) हैं। तब आपने दूसरा प्रश्न किया कि अगर मैं तुमसे ये कहूं कि इस घाटी के पीछे एक बहुत बडी सेना है तो क्या तुम मेरी बात सत्य मानोगे। सभी ने स्वीकार किया। तब आपने फरमाया कि

मैं खुदा का रसूल (ईश्वरी दूत) हूं। एक खुदा को मानो, उसी की पूजा करो, खुदा के अजाब (क्रोध) से डरो। यह सुनना था कि वहां उपस्थित लोगों ने क्रोधित होकर कहा कि क्या इसीलिए हमें बुलाया गया था, तुमने अकारण ही हमारा समय नष्ट किया और फिर सभी लोग वहां से वापस लौट गए।

मगर आप धर्म के प्रचार में लगे रहे, जब भी कोई कबीला मक्का आता आप उसके पास पहुंचते, उन्हें समझाते। खुदा का पैगाम (ईश्वर का संदेश) सुनाते। धीरे धीरे नूरी सैलाब की तरह और प्रकाश की किरणों के समान आप के मानने वालों की संख्या बढती गई। काफिरों ने जब देखा कि आपका (दीन) धर्म बढ रहा है तो उन्होंने उसे मिटाने के लिए अत्याचारों का पहाड़ तोड़ना शुरू कर दिया जो मुसलमान हो जाता उस पर ऐसा भयानक अत्याचार तोड़ा जाता कि सुनकर मनुष्य का कलेजा दहल जाता।

हजरत बिलाल को ईमान लाने के जुर्म में गर्म गर्म रेत पर लिटा कर सीने पर वजनी पत्थर रख दिया जाता ताकि हिल ी न सकें। मगर वोह उस वक्त भी ''अहद अहद'' यानी खुदा एक है, एक है की सदा बुलंद करते। हजरत खुब्बाब इबने अरस को जो गुलाम थे। इस्लाम कुबुल करने की वजह से जमीन पर अंगारे बिछा कर उसमें लिटा दिया जाता और एक आदमी सीने पर पांव रख देता ताकि करवट भी न बदल सकें। यहां तक कि जलती हुई आग ठंडी हो जाती।

हजरत जुबैर को इस्लाम लाने के जुर्म में उनके चाचा ने चटाई में लपेटकर उनकी नाक में धुनी दी जिससे उनका दम घुटने लगा। हजरत सईद बिन जैद को रस्सियों में जकड दिया जाता। हजरत अबु फकीहा के सीने पर इतना भारी पत्थर रख दिया जाता के उनकी जबान निकल पड़ती। यहां तक कि जिसने भी आपके दीन (धर्म) को कुबूल किया। उस पर मक्का के कुफ्फारों ने ऐसे ऐसे भयानक अत्याचार ढाए जिसे सुनकर पत्थरों का कलेजा भी दहल उठता और मानवता भी चीख उठती। खुद आपकी जात पर भी तरह–तरह की मुसीबतों के पहाड तोड़े गये। एक दफा आप खान ए काबा में

नमाज पढ़ रहे थे कि दुश्मनों ने आप की पीठ मुबारक पर ऊंट की ओझड़ी डाल दी। अबूजहल ने तो एक बार इस जोर से पत्थर खींचकर मारा कि आपका मुबारक सिर जख्मी हो गया, खून का फौव्वारा फूट पड़ा।

एक मर्तबा एक दुश्मन अकबा ने आपके गले में चादर लपेटकर इस जोर से खींचा कि आप घुटने के बल गिर पड़े। गरजे कि दुश्मनों ने अत्याचारों की सारी सीमा लांघ ली, मगर जो एक बार इस्लाम के शरण में आ जाता है वह हर अत्याचारों को हंसते-हंसते झेल जाता। दुश्मनों ने जब देखा कि आप अपना काम किये जा रहे हैं तो उन्होंने आपके चाचा अबुतालिब पर दबाव डाला कि वो आप को इस्लाम के प्रचार से रोकें। वोह उस समय कुरैश-कबीले के सरदार थे। सबों पर उनका बड़ा दबदबा था। मगर जब अबू तालिब ने आपसे सरदाराने कुरैश की बातें कहीं तो आपने फरमाया कि अगर ये लोग मेरे एक हाथ में चांद और दूसरे में सूरज भी रख दें तब भी मैं खुदा का संदेश पहुंचाने से नहीं रूकूंगा। आपका यह निर्णय और आपका यह स्थिर संकल्प देखकर उन्होंने आपको सांत्वना दिया।

मक्का के सरदारों ने एक बार आपको लालच भी देना चाहा कि तुम अपना ये काम बंद कर दो तो हम तुम्हें अपना सरदार मान लेंगे। तुम चाहोगे तो अरब की सबसे सुंदर स्त्री से तुम्हारा विवाह करवा देंगे। यहां तक कि उन्होंने यह भी लालच दी कि तुम अपना यह काम बंद कर दोगे तो हम सब मिलकर तुम्हें इतनी दौलत देंगे कि पूरे अरब में तुमसे बढ़कर कोई पूंजीपति न होगा। कोई दूसरा होता तो इस लालच में फंसकर अपने मिशन से हट जाता, मगर आप खुदा के सच्चे पैगम्बर और आखरी रसूल थे, आपने उन सारी दौलतों को ठुकरा दिया।

एक दफा आप इस्लाम के प्रचार के लिए ''ताएफ'' शहर भी गए। जो मक्का से उत्तर की दिशा में एक हरा-भरा क्षेत्र है। मगर वहां के लोगों ने आपके पैगाम को सुनने के बजाय आप पर पत्थरों की वर्षा शुरू कर दी। यहां तक कि वहां के सरदारों ने बच्चों तक को उकसा दिया। वोह ठटठा लगाते, मजाक उड़ाते, अभद्र व्यवहार करते और आप पर पत्थर बरसाते। जिससे आपका

पूरा शरीर रक्त रंजित हो गया। उस समय आपके साथ आपके आजाद किये गुलाम हजरत जैद भी थे।

आपका पूरा बदन खून में नहाया हुआ था। पत्थरों की वर्षा से जगह जगह खून बह रहा था। वोह आपकी तकलीफ और पीड़ा बर्दाश्त न कर सके, उन्होंने अर्ज किया कि आप इनके लिए बद्दुआ कर दें। ताकि ये बर्बाद हो जाएं, मगर इस तकलीफ और असहनीय पीड़ा के समय भी आपने फरमाया – खुदा ने मुझे रहमतुल्लिल आलमीन यानी सारे संसार के लिए रहमत बनाकर भेजा है। आज ये मुझे झुठला रहे हैं मगर इनकी आने वाली नस्लें (संतानें) मुझ पर ईमान लाएंगी। इसके बाद आपने दुआ के लिए हाथ उठा कर कहा– खुदाया इन्हें माफ फरमा और इन्हें हिदायत अता फरमा (इन्हें सच्चा रास्ता दिखा)।

कुरैश के सरदारों ने देखा कि हज़ारों जुल्मों सितम के बाद भी, हजार कठिनाइयों और हजार रूकावटों के बाद भी आपके मानने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है तो उन्होंने आपका और आपके खानदान वालों का बहिष्कार (Social Boycott) कर दिया। जो तीन वर्ष तक रहा। जिसमें आपके साथियों को कई–कई दिनों तक भूखा रहना पड़ा। बच्चे भूख से बिलखते और रोते, उनके रोने की आवाज सुनकर मक्का के कुफ्फार खिलखिलाकर हंसते और मजाक उड़ाते। आखिर तीन साल बाद किसी प्रकार हिशाम बिन अमर, अबूल बख्तरी और जमआ, बिन अस्वद वगैरा ने मिलकर बहिष्कार खत्म करने का अभियान चलाया। यह नबूवत का दसवां साल था। उसी समय बहिष्कारियों में भी फूट पड़ गई जिससे वह बहिष्कार खुद ब खुद समाप्त हो गया। जब अत्याचार इतना बढ़ गया कि उसने सारी सीमाओं को पार कर लिया और आपके साथियों का जीना दूभर हो गया तो आपने उन्हें ''हबश'' देश जाने की इजाजत दी। मगर कुरैश के सरदार वहां भी पहुंच गये और हबश के बादशाह निजाशी को भड़काना चाहा, मगर वह एक शरीफ, सभ्य, न्यायप्रिय बादशाह था। उसने मुसलमानों को बुलवाया और उनसे पूर्ण विवरण प्राप्त किया। मुसलमानों की तरफ से हजरत जाफर ने

बादशाह को बताया कि हम लोग पहले किस प्रकार पत्थरों की पूजा करते थे। गंदगियों में पड़े रहते, मुरदार खाते, पड़ोसियों को सताते, एक दूसरे पर अत्याचार करते, लड़कियों को जीवित जमीन में गाड़ देते। स्त्रियों से बलात्कार करते, उनकी इज्जत लूटते। मगर जबसे हमने इस्लाम धर्म स्वीकार किया। तब से सारी बुरी आदतें छोड़ चुके हैं। अब हम हर नेक और अच्छे काम में सहयोग देते हैं और हमेशा सच बोलते हैं। एक खुदा (ईश्वर) को मानते हैं और बुराईयों को मिटाते हैं। इस का परिणाम यह निकला कि निजाशी ने कुरैश के सरदारों को नाकाम व नामुराद लौटा दिया।

हबश से नाकाम लौटने पर उनका गुस्सा और भड़क उठा। अब वो खुलेआम मुसलमानों पर अत्याचार करने लगे। मगर आप अपना काम बराबर करते रहे और लोगों को सच्चाई का रास्ता बताते रहे।

नबूवत का दसवां साल था कि मदीना के कुछ लोग मक्का आए। जिनसे आपने मुलाकात की और उन्हें इस्लाम का पैगाम सुनाया वो लोग मदीने के यहूदियों से सुन भी चुके थे कि जल्द ही नबीए आखेरुज्जमां (अंतिम दूत) तशरीफ लाने वाले हैं उन्होंने जब आपका पैगाम सुना तो वो समझ गए कि आप ही वो हस्ती हैं। जिनके आने की बात यहूदी किया करते थे। इसलिए उन्होंने आप के पवित्र संदेश में सच्चाई की किरण देखकर फौरन इस्लाम स्वीकार कर लिया यह छः व्यक्ति थे।

अगले साल बारह लोग हज के मौके पर आए और उन्होंने आपसे ''बैअत'' की। जिसे इतिहास में ''बैअते अक-ब-ए ऊला'' कहते हैं। वो बैअत यह थी।

1. अल्लाह के सिवा किसी की दास्ता स्वीकार नहीं करेंगे।
2. चोरी नहीं करेंगे।
3. जिना नहीं करेंगे।
4. अपनी औलाद का कत्ल नहीं करेंगे।
5. किसी पर झूठा आरोप नहीं लगायेंगे।
6. आप जिस भली बात का हुक्म देंगे उससे मुंह न मोड़ेंगे।

लौटते वक्त आपने हजरत ''मसअब इब्ने उमैर'' को उनकी शिक्षा के लिए साथ कर दिया। इस तरह मदीना में इस्लाम की मधुर किरणें फैलने लगीं और हर आप का पवित्र संदेश गूंजने लगा।

नबूवत का बारहवां साल था कि आपको ''मेराज'' हुई जिसमें खुदा ने आपको जमीन वो आसमान की सैर करवाई। जन्नत वो दोजख दिखाया। हजरते मुसा, हजरते ईसा, हजरते इब्राहिम, हजरते युसूफ, हजरते आदम अलैहिस्सलाम से आपने मुलाकात की। यहां तक की आपने अपने माथे की आंखों से खुदा का दीदार भी फरमाया। वापसी में आपको खुदा ने ''नमाज़'' का तोहफा दिया।

अगले साल मदीने के बहत्तर (72) आदमियों ने आप के हाथ पर बैअत की और आपको मदीना आने की दावत दी। मदीन ए मुनव्वरा में इस्लाम तेजी से फैल रहा था जिससे मक्का के सरदार आगबबूला होते जा रहे थे। जैसे–जैसे वहां इस्लाम के फैलने की खबर उन्हें लगती वैसे वैसे ये क्रोधित होकर अत्याचार की सीमा और भी लांघने लगते। आखिर एक दिन आपने अपने तमाम साथियों को मदीना जाने की अनुमति दे दी। मगर जब वो मदीना जाते मक्का के लोग उन्हें और ज्यादा तकलीफ देते। फिर भी धीरे–धीरे छुप छुपाकर लोग मदीना पहुंचने लगे। कुरैश के सरदारों ने देखा कि सभी मदीना चले गये। सिर्फ रसूले पाक, आपके साथी हजरत अबूबकर और हजरत अली रह गये हैं तो उन्होंने आपके कत्ल का प्लान (हत्या का षड़यंत्र) बनाया। एक रात सारे सरदारों ने आपके घर ही को घेर लिया ताकि आपको शहीद कर के सदा के लिए इस्लाम का नाम ही मिटा दें। मक्का वाले हजार विरोध और हजार शत्रुता के बाद भी यह जानते और मानते थे कि आप सच्चे हैं। सत्यवादी, वचनबद्धता में पूर्ण ईमानदार और अमानतदार हैं। इसी कारण वो दुश्मनी के बावजूद अपना सामान आप ही के पास रखवाते थे। जिस रात आप के कत्ल की साजिश की गई और आप को खत्म कर देने का षडयंत्र रचा गया। उस समय भी कई लोगों का बहुमूल्य और इन्तेहाई कीमती सामान आप के पास रखा हुआ था।

आपने हजरत अली को अपने बिस्तर पर लिटाया और सारे लोगों का सामान उन तक पहुंचाने की जवाबदारी सौंपी। फिर खुद कुर्आन की आयत पढते हुए बाहर तशरीफ लाये। मक्का के सारे सरदार तलवार लिये आपकी राह तक रहे थे। मगर उनके बीच से नबवी जाह वो जलाल के साथ इस तरह बाहर तशरीफ लाये कि कोई आपको देख ही नहीं सका। कुदरत ने सभी की आंखों पर पर्दा डाल दिया था।

आप अपने साथी हजरत अबूबकर सिद्दीक के साथ पहले गारेसौर में तशरीफ ले गये। दुश्मनों ने जब अपनी ये चाल भी नाकाम देखी तो आपको पकड़ने के लिए बड़े-बड़े ईनाम का ऐलान किया। जिससे लोग चारों तरफ आपकी तलाश में दौड़ पड़े। यहां तक कि कुछ लोग उस गार तक भी पहुंच गये जिस में आप छुपे थे। मगर खुदा की शान कि उस वक्त गार के मुंह पर मकड़ी ने जाला तान दिया और कबूतरी ने अंडा दे दिया। जिसकी वजह से वो लोग आपके पास पहुंच कर भी आपको न पा सके। तीसरे दिन आप वहां से मदीना के लिए रवाना हुए।

मदीना वालों ने जब सुना कि आप मक्का से चल पड़े हैं तो उनकी खुशियों का ठिकाना न रहा। उधर आपने अपना सफर जारी रखा, यहां तक कि ८ रबिउल अव्वल को आप ''कुबा'' नामी एक गांव में पहुंचे, जहां आपने सबसे पहली मस्जिद की बुनियाद (नींव) डाली।

मदीना वाले हर रोज आपके स्वागत के लिए शहर से बाहर निकलते और शाम तक प्रतीक्षा करते। रबीउल अव्वल की १२ तारीख थी। शुक्रवार का दिन था आप कुबा से रवाना हुए, अभी ''बनी सालिम'' के मुहल्ला तक पहुंचे थे कि जुमा का वक्त आ गया आपने पहला जुमा अदा फरमाया, और फिर वहां से मदीना रवाना हुए, जब आप शहर में पहुंचे। सारा शहर रहमत व नूर में नहाने लगा हर तरफ खुशियों की बारात नजर आने लगी। मदीने की धरती का सीना गर्व से फूलने लगा। आसमान का सिर अकीदत से झुकने लगा। पूरा वातावरण नूर में नहा कर आपके पवित्र सुगंध से सुगंधित हो उठा।

मक्का वालों ने मुसलमानों को मदीना में सुख शांति से रहते देखा तो वोह तिलमिला उठे। 17 रमजान 2 हिजरी को ''बदर'' के मैदान में एक हजार की सेना लेकर वो लोग आपसे लड़ने आ खड़े हुए।

मुसलमान मदीना से किसी प्रकार का कोई सामान लेकर नहीं आये थे। उनके पास लड़ाई का भी कोई सामान नहीं था। मगर शत्रु सामने खड़ा उन्हें ललकार रहा था।

मजबूरीवश उन्हें भी मैदान में आना पड़ा। परंतु स्थिति यह थी कि न तो लड़ने के लिए उनके पास हथियार थे न ही सवारी का कोई प्रबंध। यहां तक कि दुश्मनों की फौज की संख्या जो एक हजार थी उस के मुकाबले में ये मात्र तीन सौ तेरह थे। मगर वोह खुदा पर भरोसा करने वाले थे। रसूले पाक पर मर मिटने का जज्बा और जान न्यौछावर करने का संकल्प लिए वो रणक्षेत्र में बडी दिलेरी और बहादुरी से उतरे और ऐसी वीरता से लड़े कि दुश्मन के पैर उखड़ गये और वोह मैदान छोड़ भाग खड़े हुए।

दूसरे साल शव्वाल माह को मक्का वालों ने फिर ओहद के मैदान में मुकाबला किया। मगर यहां भी आपके मानने वालों को विजय प्राप्त हुई। अभी इस लड़ाई को दो साल भी नहीं हुआ था कि १७ शव्वाल ५ हिजरी को मक्का वालों ने पूरे अरब को साथ लेकर मदीना पर चढ़ाई कर दी। एक तरफ पूरा अरब था दूसरी तरफ खुदा के कुछ नेक बंदे। जिन्हें खुद अपने ही घरों से लोगों ने निकाल दिया था और अब मदीना में भी चैन से उन्हें बैठने नहीं दिया जा रहा था। मगर खुदा के ये नेक बंदे खुदा की सहायता के सहारे आगे बढ़े और दुश्मनों का बड़ी दिलेरी से मुकाबला किया। अंततः जंगे खंदक में उपस्थित सेना में फूट पड़ गई और फिर सारे शत्रु स्वयं ही भाग खड़े हुए।

हिजरत का छटवां साल था। आपने उमरह (मक्का में जाकर विशेष प्रार्थना करना) का इरादा फरमाया और अपने चौदह सौ अनुयायियों के साथ मर्दाना से प्रस्थान किया। हुदैबिया जो मक्का से पहले एक गांव है वहां आप ठहर गये। मगर मक्का वाले आड़े आये। उन्होंने आपको आगे बढ़ने से

रोका। आपने उन्हें हर तरह से समझाया कि हम सिर्फ इबादत के लिए मक्का जाना चाहते हैं। उमरह करके हम वापिस मदीना चले जायेंगे मगर मक्का वाले अड़ गए कि हम किसी भी हाल में आपको अंदर नहीं आने देंगे। आखिर में एक इतिहासिक समझौते के बाद आप वहीं से मदीना वापस आ गये। जो इतिहास में ''सुलह हुदैबिया'' के नाम से प्रसिद्ध है।

ये समझौता दिखने में तो मुसलमानों के विरूद्ध लगता था। मगर खुदा ने उसे ''फतेह मबीन'' खुली विजय और जीत बताया। फिर कुछ महीनों में ही न केवल मदीना वालों ने बल्कि मक्का वालों ने भी समझ लिया कि यह वास्तव में मुसलमानों की बहुत बड़ी जीत है। इसी समझौते के दौरान एक समय यह झूठा प्रचार भी हुआ कि आपके दूत हजरत उस्मान जो मक्का वालों को समझाने गये थे। उनकी हत्या कर दी गई। जिस पर आपने एक वृक्ष के नीचे अपने अनुयायियों से एक इतिहासिक वचन लिया जिसे ''बैअते रिजवां'' कहा जाता है।

रोज रोज की लडाई के बाद जब इस समझौते के द्वारा मक्का वालों से शांति मिली तो आपने इस्लाम को पूरे संसार में फैलाने पर ध्यान दिया। इस विषय में रोम के बादशाह कैसरे रोम, ईरानी शहनशाह खुसरो, मिश्र के राष्ट्र अध्यक्ष मकूकस, हबश के बादशाह निजाशी, शामी राज्यपाल मुन्जर बिन हारिस, नजद के हाकिम समाना, गस्सान के सरदार जबल्ला, यमामा में होजा बिन अली, अम्मान के बादशाह जीफर वगैरह के पास अपने दूत भिजवाये। जिस पर रोमी शहनशाह कैसरे रोम ने तो कुछ अरबों को जो उस समय व्यापार के लिए बैतूल मुकद्दस गये थे अपने दरबार में बुलवाया और आपके संबंधित कुछ बातों की जानकारी प्राप्त की। जब उसे आपके विषय में अन्य विवरण विस्तार में प्राप्त हुआ तो उसने कहा ''अगर यह सच है तो जिस जगह मैं बैठा हूं एक दिन वो उसके अधिकार (कब्जे) में होगी। यह तो मैं जानता था के एक नबी आने वाला है। मगर यह नहीं जानता था कि वोह अरब में पैदा होगा। मैं अगर वहां जा सकता तो खुद उसके पांव धोता। मगर आप की चौखट पर श्रद्धा के फूल अर्पित करने के बावजूद राज्य सिंहासन

के कारण वो इस्लाम नहीं ला सका।

उन्हीं दिनों खैबर जो यहूदियों का सबसे बड़ा केंद्र और सबसे मजबूत किला था विजय हुआ।

इस्लाम की बढ़ती ताकत से मक्का वाले बहुत खिन्न रहने लगे। दूसरी तरफ इस्लाम को मानने वाले बहुत तीव्र गति से बढ़ते रहे। "सुलह हुदैविया" (हुदैविया समझौते) में अरब के सारे कबीलों को यह अधिकार दे दिया गया था कि वोह चाहें तो कुरैश के साथ रहें और चाहें तो रसूले पाक से मित्रता के संबंध स्थापित करें जिस पर बनु खजाआ मुसलमानों के साथ हो गए और बनुबकर उनके विरूद्ध कुरैश के साथी बन गए। एक रात बनुबकर ने कुरैश की सहायता से बनू खजाआ पर आक्रमण कर दिया। वोह लोग वहां से भागकर खान-ए-काबा जा पहुंचे। मगर बनुबकर वहां भी उनकी हत्या और उनका खून बहाते रहे। जिस पर बनू खजाआ रसूले पाक के पास प्रार्थी बनकर पहुंचे। आपने कुरैश वालों को समझौते की धाराएं याद दिलाई। मगर उन्होंने खुद ही समझौता समाप्त करने का ऐलान कर दिया।

8 हिजरी में मक्का वालों के समझौता तोड़ने पर दस हजार साथियों के साथ आप मक्का की ओर रवाना हुए। जब मक्का वालों ने देखा तो अबू सुफयान को कुछ लोगों के साथ जासूसी करने भेजा। मगर वह लोग पकड लिये गये और रसूले पाक के सामने पेश किये गये। अबू सुफयान की पत्नी हिन्दा ने आपके प्यारे चाचा का कलेजा चबाया था। खुद अबू सुफयान ने आपकी हत्या का षडयंत्र रचा था। यही नहीं बल्कि हर लड़ाई में आपके विरूद्ध लोगों को उकसाने में उनका हाथ हर समय रहता था। जिसके कारण वोह मृत्युदंड पाने के अपराधी थे। मगर रसूले पाक रहमतुल्लिल आलमीन (सारी सृष्टि पर दया करने वाले) बनकर आये थे, आपने उन्हें क्षमा कर दिया। जिसका उन परइतना असर हुआ कि वोह मुसलमान हो गये। आज इस्लाम को मिटाने वाला स्वयं इस्लाम का रक्षक बन गया था।

आपका बड़ी शान वो शौकत से मक्का में प्रवेश हुआ। खान-ए-काबा में आपने नमाज अदा की। वहां जितने बुत रखे थे सब को आपने हटवा

दिया, और जब आप बाहर तशरीफ लाये तो सारे कुरैश के लोग हाथ बांधे आपके सामने खड़े थे। उनमें वोह लोग भी शामिल थे। जिन्होंने आप पर बार-बार आक्रमण किया था। वोह भी थे, जिन्होंने आपकी हत्या करनी चाही थी। वोह भी थे, जिन्होंने आपके प्यारे चचा का कलेजा तक चबा लिया था। वोह भी थे, जिन्होंने आप पर पत्थर बरसाया था। मगर आप सरापा रहमत थे। ईश्वर ने आपको सारे मनुष्य जाति के उद्धार के लिए भेजा था। हर मनुष्य जाति और हर व्यक्ति के लिए आप के हृदय में प्रेम का सागर उमड़ता रहता था और सारे संसार को आनंद धान से प्रेणित करने की अभीप्षा से आपका हृदय सदा भरा रहता था। इसलिए आप तो केवल दया ही करना जानते थे, आपने सभी को क्षमादान करते हुए किसी से कोई बदला न लेने का ऐलान किया। जो इतिहास का एक अद्भुत पाठ है। जिसमें प्रेम वो मोहब्बत और मनुष्यता का वो पवित्र झरना है जिसमें आज भी स्नान करने वाले के हृदय में सारे संसार को आनंद धाम से प्रेणित करने की अभिप्षा जाग उठती है। मक्का विजय हुए कुछ ही महीना हुआ था कि शव्वाल की 11 तारीख को जंगे हुनैन हुई। जिसमें दुश्मनों की संख्या अधिक होने के बावजूद आप को शानदार सफलता मिली। मक्का की विजय ने पूरे अरब पर दूर दूर तक अपना प्रभाव डाला। धीरे धीरे आपके मानने वालों का क्षेत्र बढता गया। हिजरत के दसवें साल आपने हज का ऐलान फरमाया। जिसे सुनते ही पूरे अरब से परवानों की तरह लोग उमड़ पड़े। एक लाख चालीस हजार दिवानों के जुलूस में ''शम्मए रिसालत की पवित्र किरणें'' मुस्कुरा रही थी। ये आपका आखरी (अंतिम) हज भी था। इसलिए इसे ''हज्जतुल वेदा'' भी कहते हैं। इस अवसर पर आपने आराफात के मैदान में जो इतिहासिक भाषण (खुतबा) दिया वो सत्य व न्याय, आपसी मेल मिलाप, भाई चारह सदभाव, सामाजिक एकता, समान अधिकार, स्त्रियों एवं दीनहीनों के प्रति सदभाव आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से उनकी हरसंभव सहायता आदि प्रकाश का ऐसा स्तंभ है जिस पर चल कर और जिसे अपना कर आज भी सारी दुनिया जगमगा सकती है।

खुतवा (भाषण) समाप्त होते ही आकाश से आवाज आई।

अल यौमा अकमलतो लकुम दीनोकुम व अतममतो अलैकुम नेअमति व रदीतो लकुमुल इस्लामा दीना।

اليوم اكملت لكم دينكم واتممت عليكم
نعمتي ورضيت لكم الاسلام دينا

अर्थ :– आज हमने तुम्हारे लिए धर्म पूरा कर दिया और तुम पर अपनी नेअमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए दीने इस्लाम चुन लिया।

हज से वापसी पर आपका अधिक समय नमाज और इबादतों में गुजरता। 29 सफर 11 हिजरी को आप एक जनाजे (अंतिम संस्कार) से वापस आ रहे थे कि अचानक आप की तबियत खराब हो गई। जब बीमारी ज्यादा बढ गई तो आपने हजरत अबूबकर सिद्दीक को इमामत का हुक्म फरमाया। रबीउल अव्वल की 12 तारीख सोमवार का दिन था सुबह की नमाज हो रही थी आपने अपने हुजरे से पर्दा उठाया। फरजनदाने तौहीद का आकाशगंगा की पवित्रता को शर्माने वाला पवित्र मंजर देखकर लबों पर मुस्कुराहट दौड़ गई। जैसे जैसे दिन चढ़ता गया बुखार बढ़ता गया। अंततः तिरसठ साल चार दिन (बाईस हजार तीन सौ तीस दिन छह घंटा) इस दुनिया में कयाम फरमाने के पाद खुदा का आखरी पैगंबर, शहनशाहे कौनेन, रसूलों के ताजदार, अंबिया के सरदार, खुदा के महबूबे अकबर, हजरत, मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो तआला अलैह वसल्लम ने हमेशा के लिए इस संसार से पर्दा फरमा लिया।

अल्ला हुम्मा सल्ले अला सय्यदना मोहम्मद व अला आले सय्यदना मोहम्मद व अस्हाबेही व बारिक वसल्लिम सलातव व सलामन अलैका या रसूलल्लाह.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ
وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

पैगम्बरे इस्लाम और उनका अख्लाक

दुनिया में अनगिनत रिफार्मर और लीडर पैदा हुए जिन्होंने अपने क्रांतिकारी अभियान से पूरे समाज की काया पलट दी। मगर जो काम नबीयों और रसूलों द्वारा हुआ उसकी मिसाल नहीं पेश की जा सकती।

आज सारी दुनिया में अदल वो इन्साफ, अख्लाक वो मुरर्वत, नेकी और अच्छाई की जो भी रौशनी नजर आ रही है वो उन्हीं नबीयों की देन है और जहां कहीं भी बुराईयों से लड़ने का हौसला पैदा हो रहा है वो उन्हीं पाक, पवित्र और मुकद्दस हस्तियों का लाया हुआ इन्केलाब है। जिन्हें हर दौर में खुदा ने इन्सानों की हिदायत और रहनुमाई के लिए संसार में भेजा।

उन्हीं मुकद्दस हस्तियों में हजरत (मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम) हैं। जो खुदा के आखरी पैगम्बर (अंतिम ईवरीय दूत) और लास्ट प्रोफेट (Last Prophet) है जिन्होंने दुनिया की सबसे पिछड़ी कौम को नई जिंदगी दी और अपने सामने एक ऐसे समाज का निर्माण किया जहां दुनिया आपके आदर्शों और आपके संदेशों को व्यवहारिक जीवन में चलता फिरता देख सकती थी। आपका पवित्र जीवन, आपका मनमोहक संदेश, आपका अटल सिद्धांत से पूरी कौम में नई क्रांति की ज्वालामुखी भड़क उठी। देखते ही देखते वो कौम दुनिया की सारी कौमों में सबसे ज्यादा शिक्षित, सबसे ज्यादा प्रगतिशील, सबसे ज्यादा उत्साही, सबसे ज्यादा गर्वशाली और सर्वश्रेष्ठ दिखाई देने लगी।

जो लोग कल तक एक दूसरे के खून के प्यासे थे। अब एक दूसरे पर जान न्यौछावर करने लगे। जो शिक्षा से दूर अंधकार और अंधविश्वास में भटक रहे थे अब वही लोग मधुर प्रकाश का स्तंभ दिखाई देने लगे। जो भेड़ बकरियों के रखवाले थे अब वही मानवता के रक्षक और संसार के शिक्षक बन गये। आपके क्रांतिकारी इतिहास को पढ़कर इन्साईकिलोपीडिया बरटानिका को

कहना पढ़ा–

The most successful of all Religious Personalities

आपके बाद आपके सहाबा ए केराम जो आपके आदर्शों के चलते फिरते नमूना थे। उन्होंने आपके पैगाम और उद्देश्य को संसार के कोने–कोने में फैलाया। देखते ही देखते चंद सालों में केवल अरब ही नहीं बल्कि मुल्क शाम 'ईरान ईराक' मिस्त्र, चीन हर जगह इस्लाम का झंडा लहराने लगा। इतिहास साक्षी है कि इन सारी कामयबियों का कारण यही था कि आपके मानने वालों ने उस रस्सी को मजबूती से थाम लिया था जिससे कुर्आन में बताया गया था और आपने अपने मुकद्दस और अपने पवित्र जीवन में दर्शाया था।

आपके बताये हुए अटल सिद्धांतों, आपके लाए हुए विद्या प्रकाश और आपके दिखाए हुए सच्चे रास्तों पर वोह चले तो उनके हाथों में कुरआन और सीनों में इश्के रसूल का चिराग था। खुदा और रसूल की मोहब्बत में डूबकर वो आगे बढ़े तो संसार को उन्होंने इतना पीछे छोड़ दिया कि आज विज्ञान के इस प्रगतिशील और शिक्षा से प्रकाशित इस युग में भी उससे ज्यादा शिक्षित, उससे ज्यादा प्रगतिशील, उससे ज्यादा उज्ज्वल, उससे ज्यादा सुंदर, उससे ज्यादा सुगंधित और उससे ज्यादा सर्वश्रेष्ठ समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसलिए बरनाड शा ने कहा था –

If a man like Mohammed were to Assume the Dictatorship of the Modern world he would solve its Problems in a way that would bring it much needed Peace and happiness.

अगर मोहम्मद जैसा कोई आदमी दुनिया का डिक्टेटर हो जाये तो वो सारी समस्याओं का इस प्रकार समाधान कर देंगे कि जिससे पूरे संसार में

सुख और शांति की ऐसी लहर चलेगी। जिसकी हमें वास्तव में आवश्यकता है।

दुनिया में बड़े-बड़े लीडरों और रहनुमाओं के जीवनी का जब हम अध्ययन करते हैं तो कथनी और करनी में धरती और आकाश का अंतर पाते हैं मगर आपने जो कहा उसका आपने प्रमाण सबसे पहले अपने ही जीवन से दिया। आपका चरित्र, आपकी जीवनी, आपके दिन वो रात खुद इसके साक्षी हैं कि संसार में कथनी और करनी का पहली बार मिलाप आपके पवित्र और सुंदर जीवन में दिखाई पड़ता है।

आपने अख्लाके हसना (उच्च आचरण) को ईमान की पहचान बताई तो खुद उसे करके दिखाया। आपके पूरे जीवन में उच्च आचरण का मधुर और शीतल प्रकाश इस प्रकार बिखरा दिखाई देता है कि आपका कट्टर से कट्टर विरोधी और जानी दुश्मन भी उसे देखकर आपके चरणों पर श्रद्धा के फूल न्यौछावर करने लगता है। एक स्थान पर आपने अख्लाके हसना (उच्च आचरण) के बारे में फरमाया।

इन्सान हुस्ने खुल्क (उच्च आचरण) और मधुर वाणी से वो दर्जा पा सकता है वो दिन भर रोजा रखने और रात भर नमाज पढ़ने से मिलता है।

एक जगह आप फरमाते हैं कि अच्छे अख्लाक वाला दुनिया और आखिरत की नेकियां ले गया।

इस प्रकार विभिन्न स्थानों पर आप जहां अख्लाक के संबंध में महान उपदेशक (Perfect Preacher) के रूप में दिखाई देते हैं। वहीं आपके पवित्र जीवन का जब हम अध्ययन करते हैं तो यह विचार वहां चलते फिरते और पूरे जीवन में इस तरह महकते मुस्कुराते दिखाई देते हैं कि जो कोई उससे करीब हुआ, न सिर्फ वो महकने लगा बल्कि उसकी आत्मा, उसके प्राण, उसके विचार और उसका संपूर्ण जीवन भी सुगंधित हो उठा।

एक बार लोगों ने आप की बीवी उम्मुल मोमेनीन हजरत आईशा सिद्दीका (रदिअल्लाहो तआला अन्हो) से आपके अख्लाक (आचरण) के बारे में पूछा तो उन्होने दो वाक्य में आपके पूरे जीवन का चित्र खींच कर रख दिया। आप कहती हैं कि

''आपका अख्लाक संपूर्ण कुर्आन' था''

كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْآن

यनी जो कुर्आन में लिखा है वही आपने किया।

एक मौके पर आपने इसी को ज़रा फैलाकर बतलाया जिसे हदीस की प्रसिद्ध किताब ''शमा ए ले तिर्मीजी'' में इस प्रकार दर्शाया गया है कि आपकी आदत किसी को बुरा कहने की नहीं थी आप बुराई करने वालों के साथ भी बुराई नहीं करते थे। बल्कि उसे माफ कर देते थे। जब आपको किसी दो बातों में से एक का एख्तियार दिया जाता था तो उनमें जो आसान होती उसे अपनाते थे। जबकि उसमें गुनाह का कोई भी हिस्सा न हो। क्योंकि गुनाह से आप उस वक्त भी बहुत दूर रहते थे। जब आपने अपने नबी होने का एलान भी नहीं किया था। आपने कभी अपने लिए किसी से बदला नहीं लिया। लेकिन जो खुदा के हुक्म को तोड़ता उसे खुदाई कानून के अनुसार सजा देते। जिसे दूसरे शब्दों में यूं भी कहा जा सकता है कि आपने कभी किसी को सज़ा नहीं दी। बल्कि मुजरिम के लिए खुद खुदा ने जो सजा रखी। आप ने तो सिर्फ उस का पालन किया।

आपने नाम लेकर कभी किसी मुसलमान पर लानत नहीं की और न कभी किसी गुलाम, लौंडी, औरत, खादिम या जानवर पर हाथ उठाया। आप कभी भी जाएज और सही मांग का इन्कार नहीं करते। जब आपके कदम घर में पड़ते तो हर तरफ आपके मुस्कान की चांदनी बिखर जाती। दोस्तों में भी पांव फैला कर नहीं बठते। बात इस तरह रूक-रूक करते कि

कोई याद करना चाहे तो आसानी से याद कर ले।

आपका यह अख्लाक दोस्त दुश्मन सभी के साथ था। हजरत अबू जर गफ्फारी जो आपके साथी थे उनका बयान है कि एक दफा जब वो इमान नहीं लाये थे उस वक्त रसूले पाक ने उन्हें अपना मेहमान बनाया। उस रात मैंने सारी बकरियों का दूध पी लिया मगर आपने कुछ नहीं कहा। जबकि आपके घर वाले उस रात भूखे रहे।

हज़रते जैनब जो आपकी साहेबजादी थीं, मक्का से मदीना हिजरत करके आ रही थीं। उस वक्त वो हमल से (गर्भवती) थीं। मक्का के एक दुश्मन जिसका नाम हब्बार था, उसने आपको ऐसा नेजा मारा कि जिससे आप ज़ख्मी भी हुई और हमल भी गिर गया। इसी जख्म से बाद में आपका इन्तेकाल भी हो गया। मगर जब उसी दुश्मन ने आपके सामने आकर माफी चाही आपने माफ फरमा दिया।

एक दिन आपने एक गुलाम को देखा कि वो चक्की पीस रहा है और रो भी रहा है। जब आप उसके पास गये तो आपने देखा कि उसे सख्त बुखार है। मगर अपने जालिम आका के डर से आटा पीस रहा है यह देख कर आपने खुद ही उसका आटा पीस दिया और फरमाया जब तुझे जरूरत पड़े मुझे बुला लेना।

एक बार आपने एक अंधी औरत को बाजार में देखा जो ठोकर खाकर गिर गई थी और लोग खड़े हंस रहे थे। यह देखकर आपके आंखों में आंसू आ गये। आपने उसे उठाया और घर तक पहुंचा दिया। यही नहीं बल्कि हर रोज उसके पास पकी हुई चीज भी खुद ही पहुंचाते।

एक दफा सर्दी से कांपते हुए किसी बच्चे को देखा जो रो रहा था। आपने उसका हाल मालूम फरमाया तो पता चला कि वो एक यतीम गुलाम है जिसका आका बड़ा जालिम है। यह जानकर आपकी आंखें आंसुओं से भीग गई।

आपने उसे कपड़ा उढ़ाया और तसल्ली दी।

दूसरे दिन आपने फिर उसी बच्चे को देखा कि वोह बहुत भारी बोझ उठाये जा रहा है। बोझ की वजह से उसकी गर्दन दोहरी हुई जा रही है। उससे चला नहीं जा रहा था। यह देखकर आपने उसका बोझ खुद उठा लिया और उसे जहां तक जाना था वहां तक पहुंचाकर फरमाया ऐ बच्चे मोहम्मद को अपनी तकलीफ में याद कर लिया करो।

अबू सुफियान का एक गुलाम बीमार हो गया। हुजूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम को जैसे यह खबर मिली कि वोह बीमार है और कोई उसकी देख रेख करने वाला नहीं। आप फौरन उसके पास पहुंचे आपने देखा कि वो दर्द से कराह रहा है आपने उसे तसल्ली दी और फरमाया कि मत घबराओ। मोहम्मद तेरे पास हैं।

एक अमीर आदमी एक दफा अपनी लौंडी को मार रहा था और लौंडी तकलीफ और दर्द से बिलबिला बिलबिला कर फरियाद कर रही थी। लोग देखते और अमीर आदमी के डर से अपनी राह लेते। मगर जब आपका उधर गुजर हुआ तो यह जुल्म देखकर आप बरदाश्त नहीं कर सके। आपने उस अमीर आदमी को सख्ती से रोका।

मगर वो जालिम आप से भी उलझ पड़ा और गुस्ताखी करते हुए कहने लगा। तुम्हें मेरी लौंडी के मामले में दखल देने का कोई हक नहीं। आपने उसे नरमी से समझाया और जुल्म से रोका। मगर वो आपसे बराबर उलझता ही रहा।

आप मजबूरन घर चले आये मगर रात भर बेचैन रहे। बार बार फरमाते रहे कि उस कौम का क्या अन्जाम होगा जो कमजोर औरतों पर जुल्म करती है। काश। मैं उस लौंडी की कुछ मदद कर सकता। आप की बीवी हजरत खदीजा ने यह देखकर आपको तसल्ली दी कि आप बेचैन मत होईये

। मैं सुबह होते ही उसे खरीदकर आजाद कर दूंगी। दूसरे दिन वाकेई उन्होंने उसे भारी कीमत पर खरीदकर आजाद कर दिया।

एक दफा एक बूढ़ा गुलाम बाग में पानी दे रहा था। कमजोरी और बुढ़ापे की वजह से उससे पानी खींचा नहीं जा रहा था। मगर आका की डर से वो पानी खींच रहा था। यह मंजर आपसे देखा नहीं गया। आफ खुद उसके पास गये और पानी खींचकर खुद ही उसके बाग को सैराब कर दिया और फरमाया जब बाग को पानी देना हो मुझे बुला लिया करो।

एक दफा आपको पता चला कि एक यहूदी गुलाम सख्त बीमार है। उसका मालिक बड़ा जालिम और बदमाश है। यह जानकर आप खुद उसके पास पहुंच गए और सारी रात उसकी तिमारदारी करते रहे।

यह है अख्लाक ! खुदा के अंतिम ईश्वरीय दूत और आखरी पैगंबर रसूले पाक का। हकीकत यह है कि कोई भी उपदेश सार्थक वाणी से नहीं बल्कि चरित्र से हुआ करता है।

आपकी वो पवित्र वाणियां जिन्होंने जीवन का धारा मोड़ दिया समाज में क्रांती की ज्वालामुखी भड़का दी और अपने कल्याणकारी प्रभाव से एक ऐसे सुंदर और शिक्षित संसार की स्थापना की जिस की मधुरता के समक्ष आकाश गंगा की मधुरता भी श्रद्धा के फूल अर्पित करने लगती है। उसके कुछ उदाहरण देखते चलिए।

لَا يُؤْمِنُ عَبْدٌ حَتّٰى يُحِبَّ لِأَخِيهِ مَا يُحِبُّ لِنَفْسِهِ

(بخاری و مسلم)

कोई भी व्यक्ति उस वक्त तक सही और सच्चा मुसलमान नहीं बन सकता जब तक वो अपने भाई के लिए भी वही न चाहने लग जाए जो खुद अपने लिए चाहता है।

مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَرُدُّ عَنْ عِرْضِ أَخِيهِ إِلَّا كَانَ حَقًّا
عَلَى اللهِ أَنْ يَرُدَّ عَنْهُ نَارَ جَهَنَّمَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

जो मुसलमान अपने भाई की परेशानी दूर करेगा खुदा कयामत में उसे दोज़ख (नर्क) से दूर फरमायेगा।

لَا يُؤْمِنُ وَاللهِ لَا يُؤْمِنُ وَاللهِ لَا يُؤْمِنُ قِيلَ مَنْ
يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ الَّذِي لَا يَأْمَنُ جَارُهُ بَوَائِقَهُ.
(متفق علیہ)

वो सच्चा मुसलमान नहीं वो सच्चा मुसलमान नहीं वो सच्चा मुसलमान नहीं है। लोगों ने पूछा कौन या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम) आपने फरमाया जिसका पड़ोसी वो है जो अपने पड़ोसियों के लिए अच्छा हो।

خَيْرُ الْأَصْحَابِ عِنْدَ اللهِ خَيْرُهُمْ لِصَاحِبِهِ
وَخَيْرُ الْجِيرَانِ عِنْدَ اللهِ خَيْرُهُمْ لِجَارِهِ
(ترمذی)

वो पूरा मोमिन नहीं जो पेट भर खाए और उसका पड़ोसी उसके पहलू में भूखा हो।

لَيْسَ الْمُؤْمِنُ الَّذِي يَشْبَعُ وَجَارُهُ جَائِعٌ إِلَى
جَنْبِهِ (مشکوٰۃ)

आज सारे संसार में उपदेशकों की कमी नहीं। मगर उन सभी के बीच में आपकी हस्ती सबसे ऊंची, सबसे भारी और सबसे गर्वशाली दिखाई देती हैं। जिस तरह सितारों के बीच पूर्णिमा का चांद चमकता है उसी प्रकार संसार के तमाम महान उपदेशकों में आपका व्यक्तित्व प्रकाश का ऐसा स्तंभ

दिखाई देता है जिसके मधुर किरणों से सारा संसार जगमग–जगमग करता नजर आता है।

आज का संसार फिर सदियों पुराने युग की तरफ पलट रहा है। आज के युग में विज्ञान की प्रगति, इल्म का चिराग, विद्या का प्रकाश, साइंसी टेकनालाजी, ज्ञान और सभ्यता का सैलाब सारे अंधकार को बहा ले जाना चाहता हैं, संयुक्त राष्ट्र की स्थापना करके सारे संसार को जोड़ने का और एमेनिस्टी इंटरनेशनल (Amenisty International) के जरिए मानवाधिकार (Human Rights) की रक्षा का जाल सारे संसार में फैला हुआ है। मगर इसके बावजूद हर जगह वही पुराने युग का अत्याचार दिखाई पड़ रहा है। स्वतंत्रता की छत्रछाया में नारी को बरबाद करना, फैशन के नाम पर उसे नंगा करना न्याय के रूप में अत्याचार के तांडव नृत्य और मानवता के पर्दे में गरीब देशों को दास बनाकर गुलामी की जंजीरों में जकड़ना आज आम बात हो चुकी है।

इसी वैज्ञानिक और प्रगतिशील युग में जापानी शहर हिरोशिमा और नागासाकी पर बम बरसा कर सारे योरोप ने खुशियों का चिराग जलाया। इसी ईमिन्सटी इंटरनेशनल (Amenisty International) की छत्र छाया में अमरीका ने इराकी शहरों पर बम गिरा कर और हजारों निर्दोष शहरियों को मौत की गोद में पहुंचाकर संयुक्त राष्ट्र से विजेता का पुरस्कार प्राप्त किया। यही नहीं बल्कि लाखों लोगों को बरबाद करके मानव जाति पर अत्याचारी (Anti Humanisty) कदम उठाकर खुद इस इदारे और संघ को कत्ल किया और फिर इस पर उसी से इनाम भी हासिल किया।

यहूदी इराक के रिएक्ट प्लांट पर बमबारी करें। युगांडा के हवाई अड्डे पर अपने जहाज उतार कर दादा गिरी करें। सुडान के बागियों को दवा इलाज के नाम पर अमरीका अपने जासूस और लड़ाई के सामान भेजे। मगर न ही

संयुक्त राष्ट्र आवाज उठाने की हिम्मत कर सके और न ही एमेनेस्टी इंटरनेशनल में इतनी हिम्मत कि इस बारे में कुछ सोच सके।

आज हर तरफ रौशनी है मगर हृदय में अंधकार का साम्राज्य है। चेहरों पर लिपिस्टिक की लाली, पाउडर की सुंदरता और उसका हुस्मन है। मगर दिमाग उसी पुराने युग की घृणा में फंसा हुआ मानव जाति को बर्बाद करने के लिए नये नये षड़यंत्र रच रहा है। कहीं संयुक्त राष्ट्र की छत्रछाया में यह काम हो रहा है। कहीं एमेन्सटी इंटरनेशनल के नाम पर अत्याचारी तांडव नृत्य कर रहा है और कहीं मानव अधिकार (Human Rights) के पर्दे में पुराना युग वापिस लाया जा रहा है।

ऐसे वातावरण में, ऐसे अंधकार में, ऐसे दानव के सामने रसूले पाक का यह चरित्र हमें आगे बढ़ने की शक्ति प्रदान कर रहा है। जिन्होंने सदियों पहले अरब के अज्ञान रूपी भयानक अंधकार में अपने मनमोहक चरित्र का दीप जलाकर मनुष्य को उजाले में लाया था और अपने पवित्र और गर्वशाली चरित्र से प्रेम और मोहब्बत की शीतल सरीता में लोगों को डूबाकर मानव जाति का उत्थान किया था।

आज जब हम ऐसी मुकद्दस हस्ती का, ऐसी अजीम और गर्वशाली शख्सियत का, ऐसी सर्वश्रेष्ठ और महान व्यक्ति का, ऐसी मर्यादा पुरूषोत्तम और खुदा के आखरी पैगंबर का जन्मदिन मना रहे हैं जिसके सामने संसार के बड़े-बड़े उपदेशकों ने अपना सिर झुकाना गौरव की बात समझा। जिसने शिक्षा सभ्यता समानता और सुख वो शांति पर आधारित एक ऐसे समाज का निर्माण किया हो जिनकी सुंदरता उज्रवलता और शीतलता की छत्रछाया में दम तोड़ती मानवता तड़पती इंसानियत और घुटती आदमियत ने नया जीवन पाया।

यही नहीं बल्कि जिन्होंने मनुष्य को संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी बताकर उसके हृदय को प्रेम मोहब्बत और दया के प्रकाश से इतना प्रकाशित कर दिया कि उसकी सुंदरता और मधुरता के सक्षम आकाश गंगा भी लाजवांत हो जाती है। उनके जन्म दिवस के अवसर पर हमें खुद के अंदर भी झांकना होगा कि हम क्या हैं और हमें कैसा होना चाहिए?

مجوزہ مدرسہ اصلاح المسلمین و دارالیتامیٰ رائے پور (ایم پی)
بانی، محسن ملت حضرت علامہ الحاج شاہ محمد حامد علی فاروقی

गुले गुलज़ारे फारूक़ियत मोहसिने मिल्लत हज़रत मौलाना शाह मोहम्मद हामिद अली साहब फरूकी की चालिस साला खिदमत की मुंह बोलती तस्वीर। जिसने न सिर्फ मध्य भारत के कुफरिस्तान में इश्क़े रसूल की चांदनी बिखेरी और घरोघर ईल्म की रौशनी फैलाई बल्कि शुध्दी आंदोलन के मौक़े पर गैर मुस्लिमों को इस्लाम से वाबस्ता कर के एक नई तारीख़ को जन्म दिया ।

ईदुल फित्र और ईदुल अदहा के मौक़े पर हम अपने इस महबूब और तारीख़ साज़ इदारे का तआवुन करके आने वाली नस्लों को इस्लाम से वाबस्ता कर के दुनियां वो आख़िरत की कामयाबी हासिल करें

बानिये दारुल यतामा नाएबे शाहे हुदा । आप पे साया फ़ैगन है अशरफ़ो अहमद रज़ा ।।
ता अबद जारी रहेगा फ़ैज़ का दरिया तेरा । तिश्नगी अपनी बुझाएंगे यहां शाहोगदा ।।

☛ यह कुरान एक संदेश है संपूर्ण मानव जाति के लिए, और यह भेजा गया है (हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम के द्वारा) ताकि उनको इसके द्वारा सावधान कर दिया जाए। और वे जान लें कि वास्तव में ईश्वर बस एक ही है, और जो बुद्धिमान हैं वे होश में आ जाएं।

(कुरआन पाक – सूरए इब्राहीम आयत नं. 52)

☛ (Mohammed) Was Born within the full Light of History.

(The Encyclopedia Americans (1961) Vol, 19 A 292

मोहम्मद इतिहास के सपूर्ण प्रकाश में पैदा हुए।

☛ My Experience is that if Every Any Religious approached to this equality in An Appereciable Manner, It is Islam and Islam Alone .

मेरा अपना अनुभव है कि किसी धर्म ने पूर्ण रूप से समान अधिकार प्रदान किया है तो वो केवल इस्लाम और सिर्फ इस्लाम है।

(स्वामी विवेकानंद पत्र संग्रह 175)

☛ The Central Doctrine Preached By Mohammed to His Contemporariesin Arabia... though Irresistible in the Onslought of their Arms were all Conquered in their turu By the Faith of Islam.

(Introcution to George Sale's Translation of the Zaran P. V99 By Sir. E. Denison Ross)

(हज़रत) मोहम्मद का संदेश एक ईश्वर की भक्ति और पूजा करना था। यही संदेश उन्होंने अरब वालों को दिया।... ईश्वर भक्ति और सदगुण इस्लाम के प्रसार और प्रचार में इस्लामी सिपाहियों के शस्त्रों से भी अधिक शक्तिशाली थी।

☛ Modern History Attibutes Liberty Equality and Fraternity to be the Outcome of the french Resolution, but the first person to proclaim it was the founder of Islam fourteen Centuries Ago.

(Illustrated Weekly of India April 15 : 1973)

नवीनतम इतिहास स्वतंत्रता समानता और आपसी सदभाव को फ्रांसीसी क्रांति का परिणाम घोषित करती है। किंतु प्रथम व्यक्ति जिसने इसकी घोषणा की तो वो इस्लाम के संस्थापक थे जो चौदह सौ वर्ष पूर्व पैदा हुए।

☛ If Any Religion has the chance of ruling over England any Europe, within the Next Hundred years it can Only be Islam. I have Always held the Religion of Mohammed In High Estimation because of its wonderful vitality. It is the only Religion which Appears to me to passess the Assimilating capability to the Changing face of Existance, which can Make its Apeal to Every Age.

(Barnad Sha)

अगर कोई धर्म है जो आने वाली शताब्दी में इंग्लैंड पर राज्य करे। नहीं, बल्कि संपूर्ण योरोप पर एक मात्र राज्य करे। तो वोह सिर्फ इस्लाम होगा। मैंने हजरत (मोहम्मद) के धर्म को सदा उच्चतम दृष्टि से देखा है। क्यूंकि इसके अंदर आश्चर्यजनक शक्ति है। यह एकमात्र धर्म है जिसके विषय में मेरा विचार है कि इसके अंदर यह संपूर्ण क्षमता है कि वो बदलते हुए संसार को अपने में लीन कर लें। जिसके अंदर हर युग के लिए अपील है।

(बर्नाड शा)

This is the Passing Glimgte of Islam And it has much to Offer in our Restless World. But it Seems to Be An Abandoned Treasure, Abandoned by those who Bear Its Name no wonder there lines are so different from the Glory.. I described and unless they return Back to it again, They will remain in Bewilderment in the rear of Humanity's Prosession, for its is ready light and guidance from God for than and for the world (PTI)

(Drchers wady the Muslims mind MacMillan Co. Ltd. Bombay)

आस्ट्रेलिया की इसाई लेखिका अपनी पुस्तका में इस्लाम धर्म का परिचय करते हुए लिखती हैं :-

''ये इस्लाम का एक साधारण सा विवरण है और इसमें हमारे व्याकुल संसार के लिए बहुत कुछ है। मगर वास्तव में ये एक छोड़ा हुआ अपार धन (खजाना) मालूम होता है। जिसको उन लोगों ने छोड़ा है जो उसका नाम लेते हैं। क्या यह आश्चर्य की बात नहीं? कि उनके जीवन उस महान सम्पत्ति से बहुत अलग है जो मैंने बर्णन किया है और जब तक वोह फिर से इस्लाम की ओर वापस न आयेंगे वोह असंतुष्ट, तत्वहीन, व्याकुल, मनुष्यता के डेरे से बिछुड़े रहेंगे। क्योंकि ईश्वर की ओर से यही एक संदेश प्रकाश की एक किरण मार्गदर्शन है, उनके लिए भी और पूरे संसार के लिए भी.''

Islam is Peace - इस्लाम शांति का प्रयाय है।

जार्ज डब्लू बुश (राष्ट्रपति अमरीका, वाईस आफ अमरीका 18-9-2001)

Printed By - GHARIB NAWAZ PRESS. RAIPUR PH.

दिलों में इन्केलाब बरपा करने वाली मोहसिने मिल्लत एकेडमी की तारीख साज़ किताबें

1. इस्लाम और साईंस (हिन्दी)
2. इस्लाम और इक्कीसवीं सदी (हिन्दी)
3. मस्जिदे अकसा से गुम्बदे खज़रा तक (उर्दू)
4. इमाम अहमद रज़ा पर सैहूनियत की यलगार (उर्दू)
5. इस्लामी तालीम और मगरबी तालीम का बुनियादी फर्क (उर्दू)
6. मध्य भारत का अज़ीम मरसीहा (हिन्दी)
7. हजरत मोहसिने मिल्लत (उर्दू)
8. इमाम अहमद रज़ा और शुद्धि आंदोलन (उर्दू)
9. पैगम्बरे इस्लाम और उनका संदेश
10. ज़लज़ला – अज – अल्लामा अर्शदुल कादरी
    हिन्दी – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
11. पंज सूरए रज़विया – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
12. तबलीगी जमात –अज–अल्लामा अर्शदुल कादरी
    हिन्दी–मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
13. आशिके रसूल (इमाम अहमद रज़ा)
    – अज प्रोफेसर मसउ़द अहमद सा. (पाकिस्तान)
14. पैगम्बरे इस्लाम और उनका संदेश – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
15. ताजदारे छत्तीसगढ़ – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
16. कुत्बे राजगांगपुर – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
17. ताजुल औलिया – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
18. रायपुर की बहार (बंजारी वाले बाबा) – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
19. तजकिर ए बर्हाने मिल्लत – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
20. इस्लाम और मोआशिरा – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
21. तबलीगी जमात और इस्लाम – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
22. बाबरी मस्जिद (तारीख के आईने में) – मौलाना मोहम्मद अली फारूकी

-: जानशीने मोहसिने मिल्लत मौलाना मोहम्मद अली फारूकी की तारीख साज़ इंकेलाबी तहरीर :-

मस्जिदे अकसा से गुम्बदे ख़ज़रा तक :- (उर्दू)

''ए इस्राईल तेरी सरहद नील से फरात तक है'' इस्राईली पार्लियामेंट में लिखे इस साजिश का पसे मंज़र (पृष्ठभूमि)। उस का हाल और मुस्तकबिल। - हेकले सुलैमानी की तबाही और यहूदियों की बर्बादी। - सैहूनियत की इब्तिदा और इमाम अहमद रज़ा के ख्यालात। - हज़रत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा की मअरेकतुल आरा पेशिंगोई। - ऐलाने बिल फोर और उसके डायरी का एक वर्क। - यहूदियों का वो ज़ुल्म जिसने हिटलर और फिरऔन को शर्मा दिया। सैहूनियत का महेला वार और खतरनाक मंसूबा। - मिल्लते इस्लामिया की तबाही के लिए हुकूमते बर्तानिया का लाहे अमल और हर बर्ट सिमोईल हाई कमिश्नर फिलिस्तीन का इंसानियत दुश्मन एलान। - फिलिस्तीन पर अक्वामे मुत्तहेदा (U.N.O.) का कातिलाना मंसूबा। जेम्ज़ नौरिस्टाईल के डाएरी के अल्फाज़। - बर्तनवी वज़ीरे आज़म का शैतानी कहकहा ''हमने मुसलमानों से सलेबी जंगों का बदला ले लिया'' - इस्लामी आसार वो तबर्रूकात और इस्लामी शेआर पर यहूदी कहर और सऊदी पालीसी। - मक्का की धरती पर खलीफ ए आला हज़रत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा का हुकूमते सऊदिया की तनकीद पर जुर्अत मंदाना तबसिरा और उसका हल। -

तारीख के सबसे बड़े ज़ुल्म की लरज़ा खेज़ दास्तान

माज़ी की दर्दनाक तारीख खून में डूबे आज के हालात मुस्तकबिल का खतरनाक मंसूबा' मिल्लते इस्लामिया को खत्म करने की दज्जाली साजिश' सैहूनी प्रोटोकोल' बर्तानवी डाकूमेंट और जासूसों के डाएरी के खुफिया अवराक - हर सफा तारीख साज़।

हर सतर तहय्युर अंगेज़।

हर पैराग्राफ तजस्सुस खेज़।

2. इस्लाम और साइंस (हिन्दी) :-

रविशंकर यूनिवर्सिटी में पढ़ा जाने वाला मकाला। जिसे सुनकर सभी पुकार उठे। अगर इस्लाम वही है जो इसमें बताया गया है तो आज की तरक्की को साइंसी तरक्की के बजाए इस्लामी तरक्की कहना चाहिए। और वो वक्त दूर

नहीं जब कि सारी दुनिया इस्लामी अजमतों का खुले दिल से ऐतराफ करने पर मजबूर हो जाएगी। फिऔनी लाश और कुर्आनी भविष्य वाणी साइंसी रौशनी में। कम्प्यूटर और कुर्आनी सच्चाई। मनुष्य के जन्म पर कुर्आनी एलान और आज की साइंस। साइंसी तरक्की में इस्लामी योगदान। न्यूटन के विचार 'डार्विन की खोज' हेक्सले का चैलेंज आइन स्टाईन की थ्यौरी वैज्ञानिक दृष्टिकोण।

कदम-कदम पर नई खोज। वर्क-वर्क पर इस्लामी किरण।

सफा-सफा पर साइंसी ज्ञान

3. इस्लाम इक्कीसवीं सदी :- (हिन्दी)

गैर मुस्लिमों को दिया जाने वाला मधुर उपहार। इंग्लैंड का मेगनाकार्टा और अंतर्राष्ट्रीय (यू.एन.ओ.) के मानव अधिकार की वास्तविकता। हुज्जतुल वेदा का वो क्रांतीकारी संदेश जिसने इक्कीसवीं सदी को भी पीछे छोड़ दिया। इस्लामी बराबरी - जिसका एतेराफ गैर मुस्लिमों ने भी किया। वो विचार जिसने गुलामों को भी सम्राट बनाया। वो इंकेलाब - जिसने औरतों को नया जीवन प्रदान किया। योरोप की नंगी तहज़ीब जिसने समाज को निर्वस्त्र कर संसार को "एड्स का तोहफा दिया"।

कदम-कदम पर इन्केलाब, पल-पल पर क्रांती, मिनट मिनट पर नया संसार

4. इमाम अहमद रज़ा पर सैंहूनियत की यलगार

मशहूर सैंहूनियत नवाज़ सहाफी अरूण शौरी के खौफनाक इल्ज़ामात का पसे मंज़र। इस्लामी शख्सियात को मजरूह करने की यहूदी साजिश। कुर्आन वो हदीस की जदीद तफसीर वो तशरीह का यहूदी पलान। वीडियो कैसेट, आडियो कैसेट और ड्रामों के जरिए फिकरी यलग़ार। इस्लामी दहशतगर्दी और इस्लामी आतंकवाद जैसे जदीद मीडियाई इसतिलाहात का पसे मंज़र (पृष्ठभूमि)। इमाम अहमद रज़ा की अबकरियत, न्यूटन के नज़रय ए गर्दिश पर इमाम अहमद रज़ा का इन्केलाबी तबसेरा अलबर्ड एफ. पोर्टा की खौफनाक पेशिंगोई पर इमाम अहमद रज़ा की मुजाहिदाना ललकार। तहरीके खिलाफत पर इमाम अहमद रज़ा का दानिशमंदाना एकदाम। यहूदी मेशन, अरूण शौरी का पलान मगरबी मंसूबा, अंग्रेज़ी चाल और इमाम अहमद रज़ा का क्रांतीकारी पैगाम।

हर हर सफा इन्केलाब अंग्रेज हर-हर वर्क इतिहासिक
हर हर सतर ईमानी ललकोर

5. इस्लामी तालीम और मगरबी तालीम का बुनियादी फर्क

जलसा हौसला अफजाई (Certificate Apprappreciation) के मौके पर पढ़ा जाने वाला मकाला। जिसे सुनकर इंदिरा गांधी एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी के वाईस चांसलर पुकार उठे कि दुनिया की परेशानियों की वाहिद वजह इस्लामी उलूम और इस्लामी ज्ञान से दूरी है। इस्लाम ने मगरिब को क्या दिया और मगरिब ने इस्लाम को क्या दिया। मरगबी उलूम का पसे मंजर। मशिंरी स्कूलों का इतिहास। मुसलमानों की जहनी तब्दीली (Brain Washing) का खौफनाक पलान। मगरबी उलूम या ईसाइयत का हमला। नई दुनिया पर इस्लामी तालीमात के अज़ीम असरात। जदीद साइंस का बानी इस्लाम या योरोप?

वो मकाला जिसने दानिश्वरों के दिलों पर दस्तक दी। डाक्टरों और प्रोफेसरों के कुलूब में ईमानी तपिश पैदा की। मुफक्केरीन और विद्वानों को ख्वाबे गफलत से जगाया। यूनिवर्सिटी के वाईस चांसलर और विद्वानों के बीच पढ़ा जाने वाला इतिहासिक मकाला।

6. ताजदारे छत्तीसगढ़

औलियाए केराम की मुकद्दस जिन्दगी में फैलता इस्लाम। मुजाहिदाना किरदार वो अमल के सांचे में ढली मुकद्दस जिन्दगी। बातिल परस्तों के ऐवानों में इन्तेशार। इस्लाम दुश्मन ताकतों की साजिश और अल्लाह वालों की ईमानी ललकार। करामात की हक़ीक़त और बातिल परस्तों पर उसके असरात। छत्तीसगढ़ में इस्लाम की आमद और उसका फरोग़। ताजदारे छत्तीसगढ़ सय्यदना इन्सान अली बाबा (अलैहिर्रहमा) के वो फ्यूज़ वो बर्कात जिसने गैर मुस्लिमों के तारीक दिलों में इस्लाम की रौशनी फैलाई। उर्स की हकीकत और उसका इन्केलाबी पैग़ाम। औरतों की कव्वाली और मर्दों की मजबूरी।

एक इन्केलाब अंगेज़ हस्ती, एक इशकोवका का पैकर, एक रहमत वो नूर का सावन जिसने गैर मुस्लिमों के दिलों पर हुकूमत की। माबूदाने बातिल के एवानों में जलजला डाला - छत्तीसगढ़ की धरती को नसीमे हिजाज़ की फिरदौसे बहारां से मोअत्तर करने वाली अज़ीम हस्ती।

एक इतिहासिक किताब एक क्रांतिकारी संदेश। जिसने मुसलमानों के कुलूब ही को नहीं बल्कि गैर मुस्लिमों के दिलों को भी इस्लामी चिराग़ से रौशन किया।

7.हज़रत मोहसिने मिल्लत

जब अंग्रेज़ों ने हिन्दुस्तान से मुसलमानों को खत्म करने का भयानक मंसूबा तैयार किया और शुद्धी आंदोलन ने मुसलमानों को गैर मुस्लिम बनाने का षड़यंत्र रचा। तब एक मर्दे मुजाहिद की ललकार ने तारीख का धारा किस तरह मोड़ा। जेल की तारीक कोठारियों में इस्लाम का फैलता उजाला। हज़रत मोहसिने मिल्लत के अज़ीम कारनामों पर काएदीन मिल्लत का खिराजे अकीदत। तहरीके खिलाफत और हज़रत मोहसिन मिल्लत। गैर मुस्लिमों में इस्लाम पहुंचाने वाला मुबल्लिगे इस्लाम और कुफ्रिस्तान में ईमानी शमा जलाने वाला अज़ीम मसीहा। जिस ने कुफ्र की तारीकियों में डूबे दिलों को फिरदौसे हिजाज़ की किरणों से रौशन किया।

हर-हर सफा पर इस्लामी तारीख।

हर हर वर्क पर इंकेलाबी उजाला। हर हर सतर में ईमानी किरणें।

8. इमाम अहमद रज़ा और शुद्धी आंदोलन

मुसलमानों को गैर मुस्लिम बनाने वाली भयानक तहरीक। शुद्धी आंदोलन का पसे मंज़र। मिल्लत इस्लामिया पर सैहूनियत की यलगार और अंग्रेज़ों का कातिलाना हमला। आलमी सतेह पर मुसलमानों में फूट डालने वाली ईसाई साजिश। हिन्दुस्तान से इंग्लैंड तक बातिल परस्तों का मुत्तहेदा मोहाज़। भारत से मुसलमानों को खत्म करने की शैतानी साजिश। उलमाए अहले सुन्नत की मुजाहिदाना ललकार। खोल्फाए आला हज़रत की कामयाब यलगार। हज़रत मोहसिने मिल्लत की दानिश मंदाना कयादत। हुज़ूर मुफ्तिए आज़मे हिन्द, हज़ूर मोहद्दिसे आज़मे हिन्द, कुत्बे रब्बानी हज़रत अशरफी मियां और सदरूल अफाज़िल जैसी शख्सियतों का सरफरोशाना किरदार। तारीखी दस्तावेज़ात के साये में।

माज़ी की मुजाहिदाना ललकार। हाल का सरफरोशाना किरदार।

मुस्तकबिल का मुदब्बेराना पलान।